वर्ष 3, अंक 12
दिसंबर 2019
जे-7 श्रीरामनगर
रायपुर (छ.ग.)

किलोल

आर.एन.आई
पंजीयन क्रमांक
CHHHIN/2017/
72506

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा, शेख अजहरुद्दीन

प्यारे बच्चों,

हम सबके लिए गर्व की बात है कि छत्तीसगढ़ का राजगीत घोषित कर दिया गया है. किलोल के इस अंक में सबसे पहले हमने राज्य के राजगीत को ही प्रकाशित किया है जिससे सभी बच्चे इससे परिचित हो सकें.

दिंसबर का माह छत्तीगसढ़ के लिए बहुत विशेष है. इसी माह में पूज्य गुरु घासीदास जी का जन्म दिवस पड़ता है. इसी महीने में छत्तीसगढ़ के गांधी पंण्डित सुंदरलाल शर्मा जी का जन्मदिवस भी है. किलोल के इस अंक में दोनो महापुरुषों के संबंध में रचनाएं प्रकाशित की है. आइये हम इन महापुरुषों से अपने जीवन के लिये सीख लें.

किलोल लिये कहानी, गीत, कविताएं, पहेलियां, चुटकुले आदि का हमेशा की तरह स्वागत है. किलोल http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है. सभी बच्चों को ढ़ेर सा प्यार.

आलोक शुक्ला

अनुक्रमणिका

छत्तीसगढ़ का राज गीत 6

दुख का कारण 9

बाढ़ से बचा गांव 13

साथ का प्रभाव 14

सुरभि और पीहू 16

हाँ मैं बच्चा तो ही हूँ जो ऐसा कर सकता हूँ 18

कहानी पूरी करो 20

हाथी और गौरैया 20

संतोष कुमार कौशिक व्दारा पूरी की गई कहानी 21

इंद्रभान सिंह कंवर व्दारा पूरी की गई कहानी 23

लोमड़ी और बकरी 24

चित्र देखकर कहानी लिखो 26

लालच बुरी बला है 26

घमंडी कुता 27

बहादुर कुत्ता 27

डॉगी फिर बना उल्लू 29

चित्र कविता - लालची कुत्ता 30

अगहन बिरसपति के पूजा 34

विज्ञान कहानी - खाद्य श्रृंखला 37

चम्पा अउ चमेली 39

आये सर्दियों के प्यारे दिन 41

गणित 43

I Want 44

गरीबी में जीवन 46

गुरु घासीदास बाबा 48

चिड़िया 50
छत्तीसगढ़ के गांधी 51
छत्तीसगढ़ दर्शन 53
छोटे-बच्चे 58
जय हो छत्तीसगढ़ के धाम 60
जल की प्रकृति 61
जाड़ के महिना 63
जूते जी 64
जेठौनी तिहार 65
धरती पर लगा पेड़ 67
नवाचार - अंकों का पहाड़ा 69
नवाचार - कबाड़ से जुगाड़ कर मानव अंगों का मॉडल 70
नवाचार - कबाड़ से जुगाड़ 71
नवाचार - धान के पौधों से झालर 72
नवाचार - सपेरा बस्ती में विशेष कक्षाएं 73
नो पेन्डिग 76
प्यारे बच्चों! आओ मेरे पास 77
प्रेम सदा बरसाय (कुंडलियाँ) 79
बचपन 80
मेरा वो प्यारा बचपन मस्ती 82
मेरी दादी 85
मेला चले हम 86
मोर छत्तीसगढ़ के माटी 88
मोला सरल जीवन दे दे 91
लइका मन लेखक - टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला 94
लाला जी 96

सपना देख 98
लेखक - टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला 98
साग भाजी 99
सृजन करें 100
हम स्कूल चलेंगे 101
नन्दा मैडम की कक्षा 102
संख्या-चार्ट और संबंधित गतिविधियां 114
पहेलियाँ 123
चित्र और चित्र कविता 124
भाखा जनउला 126

छत्तीसगढ़ का राज गीत

लेखक - डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा

अरपा पैरी के धार, महानदी हे अपार

इँदिरावती हा पखारय तोर पईयां

महूं पांवे परंव तोर भुँइया

जय हो जय हो छत्तीसगढ़ मईया

जय हो जय हो छत्तीसगढ़ मईया

हो हो हो आ~~~अ

सोहय बिंदिया सहीं, घाट डोंगरी पहार

सोहय बिंदिया सहीं, घाट डोंगरी पहार

चंदा सुरूज बनय तोर नैना,

चंदा सुरूज बनय तोर नैना

सोनहा धाने के अंग, लुगरा हरियर हे रंग

सोनहा धाने के अंग, लुगरा हरियर हे रंग

तोर बोली हावय सुग्घर मैना

अंचरा तोर डोलावय पुरवईया

महूं पांवे परंव तोर भुँइया

जय हो जय हो छत्तीसगढ़ मईया

जय हो जय हो छत्तीसगढ़ मईया

हो हो हो आ~~अ

रयगढ़ हावय सुग्घर, तोरे मउरे मुकुट

रयगढ़ हावय सुग्घर, तोरे मउरे मुकुट

सरगुजा अउ बिलासपुर हे बइहां

सरगुजा अउ बिलासपुर हे बइहां

रयपुर कनिहा सही घाते सुग्घर फबय

रयपुर कनिहा सही घाते सुग्घर फबय

दुरूग बस्तर सोहय पैजनियाँ

नांदगांव नवा करधनिया

महूं पांवे परंव तोर भुँइया

जय हो जय हो छत्तीसगढ़ मईया

जय हो जय हो छत्तीसगढ़ मईया

जय हो जय हो छत्तीसगढ़ मईया

जय हो जय हो छत्तीसगढ़ मईया

दुख का कारण

लेखक - बलदाऊ राम साहू

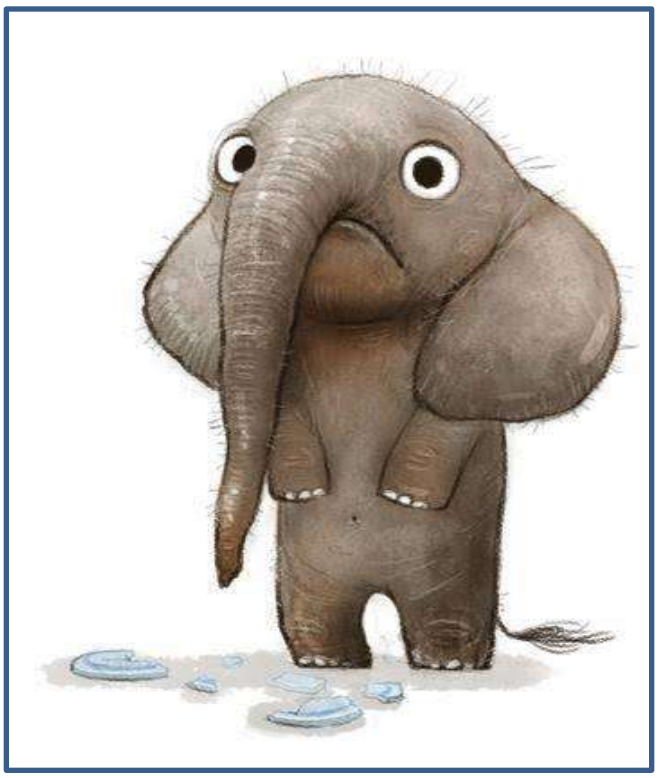

हाथी दादा आज गुमसुम बैठा हुआ है, न जाने उसके मन में कौन-सी पीड़ा है. आज बार-बार उसका मन रोने को हो रहा है; पर वह रो नहीं पा रहा है. नम आँखों से वह इधर-उधर देखता है, तो कोई न कोई उसे दीख जाता है. पीड़ा बाँटने से कम होती है, पर वह अपनी पीड़ा किससे बाँटे? आज संवेदनाएँ मर गई हैं, किसी से अपनी पीड़ा कहो, तो सोचता है कि समर्थ होकर भी अपना रोना रो रहा है.

जंगल में कितने सारे प्राणी हैं, सब की अपनी समस्या, अपनी मजबूरियाँ हैं और सब अपने आपको एक दूसरों से अलग रखे हैं. शेरसिंह के मन के अहम् ने उसे सबसे दूर कर दिया है. वह अपने अहंकार के कारण किसी को कुछ नहीं समझता. सभी

को वह हेय की दृष्टि से देखता है. इसलिए सभी उससे दूरी बनाकर रखते हैं. भालू काका तो अपने में ही मस्त रहते हैं. उनका सिध्दांत ही है - ''न उधो का लेना, न माधो को देना.'' अपनी राह आओ और अपने राह जाओ. सियार, लोमड़ी, लकड़बग्घे सब का अपना-अपना राग, अपनी-अपनी डफ़ली. पर हाँ, नभचर जरूर मिलकर रहना पंसद करते हैं. कभी-कभी कौआ ही है जो अपनी अकड़ दिखा देता है, परंतु जब उसे कोयल और कबूतर समझाती हैं, तो वह भी समझ जाता है. नन्ही गौरैया बहुत देर से हाथी दादा को गुमसुम बैठा हुआ देख रही थी, किन्तु वह उसके पास जाकर कुछ कहने की हिम्मत नहीं जुटा पा रही थी. तभी उस डाल पर एक बुलबुल भी आकर बैठ गई और मधुर आवाज में गाने लगी. बुलबुल की मीठी आवाज सुनकर गौरैया भी चहकने लगी. बुलबुल का गाना और गौरैया का चहकना मधुर होते हुए भी हाथी दादा को अच्छा नहीं लगा. जब मन खिन्न होता है, तो कुछ भी अच्छा नहीं लगता.

थोड़ी देर के बाद गौरैया ने बुलबुल से कहा - ''बहन हाथी दादा आज उदास लग रहे हैं, न जाने वह क्यों गुमसुम बैठे हैं?'' बुलबुल ने कहा - ''बहन हम क्या कर सकते हैं?'' हाथी दादा हमसे बड़े हैं. छोटे होते तो जाकर कुछ बात करते, उन्हें समझाते परंतु उनसे बात करें तो करें कैसे? नन्ही गौरैया ने बड़े प्रेम से कहा - ''बहन आपका कहना ठीक है लेकिन हम उनसे उनके दुख का कारण तो पूछ सकते हैं; वे बताएँ या न बताएँ?''

''हाँ यह ठीक है,'' बुलबुल ने कहा. नन्ही गौरैया और बुलबुल फुर्र से उडकर हाथी दादा के माथे पर जाकर बैठ गईं और चूँ-चूँ-चूँ करने लगीं. हाथी दादा बिना कुछ ध्यान दिए लेटे रहे. वह तो आज किंकर्तव्यंविमूढ स्थिति में थे. जब हाथी दादा को गौरैया और बुलबुल ने फिर भी चुप देखा तो वे उड़कर हाथी दादा के सामने जा कर

बैठ कर चूँ-चूँ करने लगीं. कछु देर चूँ-चूँ करने के बाद वे चुप हो गईं. उनकी अपेक्षा थी कि हाथी दादा अब तो जरूर कुछ न कुछ बोलेंगे,पर हाथी दादा को कुछ ना बोलते देखकर नन्ही गौरैया ने हिम्मत करके हाथी दादा से कहा- ''हाथी दादा, लग रहा है आप आज बड़े उदास हैं. क्या हम आपकी उदासी का कारण जान सकते हैं?'' हाथी दादा बिना कुछ प्रतिक्रिया किए मौन बैठे रहे, तब नन्ही गौरैया ने पुनः कहा- ''प्लीज़ दादा, हमें बताओ, आपकी उदासी का क्या कारण है?''

हाथी ने कहा- ''कुछ नहीं आज मन अच्छा नहीं है.''

क्यों दादा, अब बुलबुल ने पूछा.

हाथी दादा अब अपने को रोक न सके, फफक-फफक कर रो पड़े. नन्ही चिड़ियों को दादा का इस तरह रोना अच्छा नहीं लगा। बुलबुल हाथी दादा को ढ़ाढ़स बँधाते हुए बोली -''दादा हम नन्ही चिड़िया आपकी क्या मदद कर सकती हैं, आप तो स्वयं इतने समर्थ हैं फिर भी आप इतने उदास क्यों?''

हाथी दादा ने आँसू पोंछते हुए कहा - ''बच्चों, अपनी पीड़ा मैं किससे कहूँ, और कौन सुनेगा मेरा दर्द. किसी को अपनी पीड़ा बताऊँ भी तो वह उपहास ही करेगा.''

इन कथनों से हाथी दादा की पीड़ा का अहसास किया जा सकता था. नन्ही गौरैया और बुलबुल ने उन्हें ढाढस बाँधते हुए कहा - ''दादा आप कहिए तो भला, आप अपनी पीड़ा कहेंगे ही नहीं, तो हम समझेंगे कैसे?'' अपने आँसू पोंछते हुए हाथी दादा ने कहा- ''बच्चों, मैं मोटा हूँ. मैं हिरनों की तरह कुलाचें नहीं मार सकता. बंदरों की तरह उछल कूद भी नहीं कर सकता. मैं भी चाहता हूँ कि बच्चों के साथ खेलूँ और उनकी तरह

दौड़-भाग करूँ, किन्तु बच्चे मुझसे दूर-दूर रहते हैं. मेरा बड़ा होना मेरे लिए अभिशाप है.'' ''दादा कौन कहता है, कि तुम्हारा बड़ा होना अभिशाप है,'' बुलबुल ने नम्र स्वर में कहा. गौरैया को दादा की बात पर हँसी आ गई. उसने कहा- ''दादा, आप तो बच्चों की तरह बात तरह बात करते हैं. यह भी कोई दुखी होने की बात है? ऐसे में तो सबसे अधिक दुखी हमें होना चाहिए. हम कितने छोटे हैं, निरीह हैं, कोई भी, कभी भी हमें या हमारे बच्चों को मार गिराता है. देखिए फिर भी हम सदैव खुश रहते हैं. हर दम चहकते रहते हैं. हमारे चहकने से बहुतों को सुख मिलता है. हम दूसरों को सुख पहुँचाकर सुखी होते हैं? फिर आप तो जंगल के सभी प्राणियों में सबसे बड़े हैं. जंगल का राजा शेर सिंह भी आपका आदर करता है. रही बच्चों की बात, तो वे आपका सम्मान करते हैं, इसीलिए आपके पास नहीं आते. चाहें तो आप बच्चों को अपने पास बुलायें और उसने बात करें. वे जरूर आएंगे. उनकी बातें, उनका भोलापन आपको खुशी देगा और आपका एकाकीपन भी दूर हो जाएगा. बच्चे भी आपसे दोस्ती कर प्रसन्न होंगे.'' बुलबुल बोली- ''दादा सभी प्राणियों की अपनी अलग-अलग प्रकृति है, अलग-अलग शारीरिक संरचना और अलग-अलग स्वभाव है. छोटा हो या बड़ा सब का अपना महत्व है. इसीलिए ईश्वर ने हम सब को अलग-अलग पहचान दी है.''

गौरैया और बुलबुल की बातें सुनकर हाथी दादा का मन कुछ प्रसन्न हुआ. उन्हें लगा कि सच में वे व्यर्थ ही चिंतित थे. वे अपने महत्व को नहीं समझ पा रहे थे और उन्होंने अपने आपको सबसे अलग कर लिया था. हाथी दादा को अपने व्यर्थ के सोच पर पश्चाताप हुआ. उन्होंने गौरैया और बुलबुल के प्रति अपना आभार जताया. गौरैया और बुलबुल खुशी-खुशी मधुर गीत गाते हुए आसमान में उड़ गए.

बाढ़ से बचा गांव

लेखिका एवं चित्र - खुशी कुमारी, भावना गुप्ता, चंचल कुमारी, नीलम शर्मा

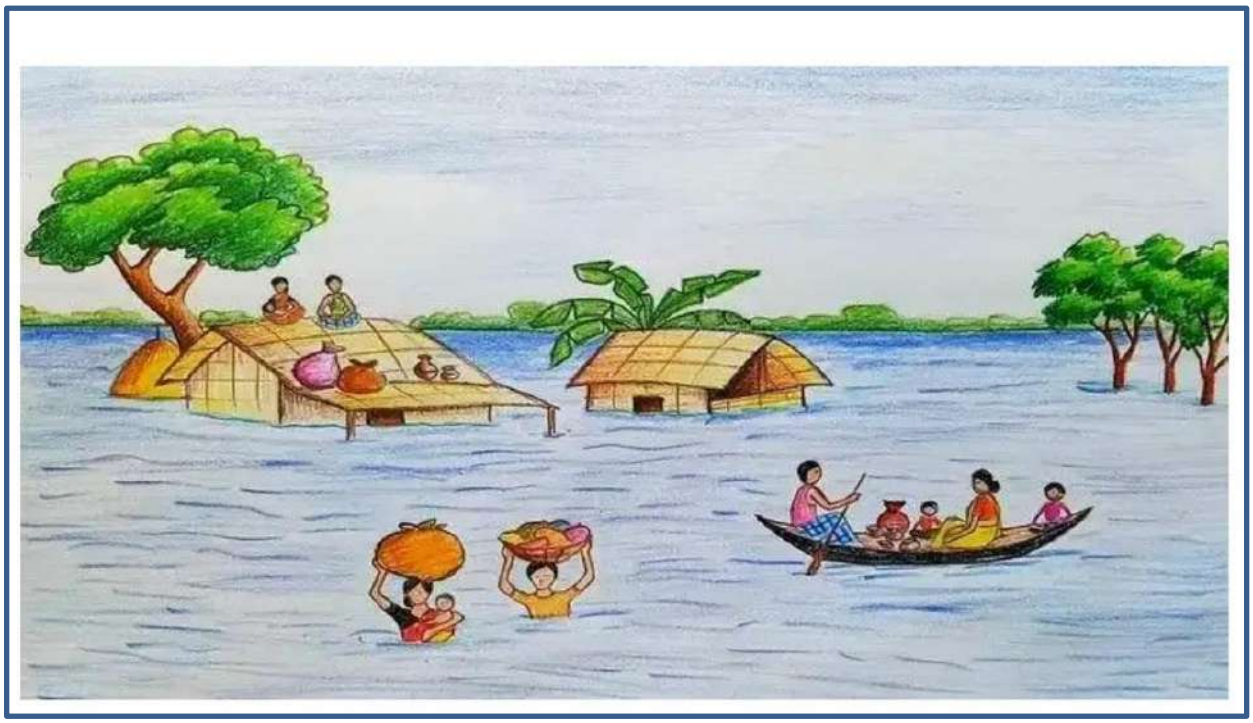

एक बहुत पुराना गांव था. उस गांव में कुछ ही घर थे. उस गांव में पेड़ पौधे भी थे. गांव में कुछ बूढ़े व्यक्ति भी थे और छोटे-छोटे बच्चे भी थे. एक दिन बहुत जोर से मूसलाधार वर्षा होने लगी. उस गांव में बिजली भी नहीं थी. लगातार बारिश होने से गांव में बाढ़ आ गई जिससे लोगों के घर एवं पेड़ पौधे डूब गए. सब लोग घर की छत पर चले गए. कुछ देर बाद एक नाव दिखाई पड़ी. सब लोग नाव पर बैठकर एक ऊंचे स्थान पर चले गए. पानी उतर जाने के बाद लोग अपने गांव में वापस आकर खुशी-खुशी रहने लगे.

साथ का प्रभाव

लेखिका - श्वेता तिवारी

एक राजा वन में शिकार खेलने गया. जंगल में भटक गया. इधर उधर घूमते हुए उसे एक झोपड़ी दिखी. राजा ने सोचा वहां जाकर थोड़ा विश्राम कर लूंगा और रास्ता भी पूछ लूंगा. झोपड़ी के पास पहुंचकर राजा ने देखा कि व्दार पर एक तोता टंगा है. राजा को देखते ही तोते ने रट लगाना शुरू कर दिया - ''चेन हार और मुकुट तलवार लूटो.'' वह झोपड़ी चोरों की थी. कोई यात्री आता तो तोता ऐसे ही शोर मचाता और चोर राहगीरों को लूट लेते थे. राजा ने सोचा यहां से जल्दी निकल जाना चाहिए. उसने घोड़े को एड़ लगाई और दूर निकल गया. राजा ने दूर एक आश्रम देखा. उसने सोचा यहीं जाना ठीक रहेगा. राजा जब वहां पहुंचा तो वहां एक तोता बैठा था. राजा को देखते ही बोला - ''आइए स्वागत है आपका. आराम से बैठें जलपान करें.'' तोते की आवाज सुनकर झोपड़ी से साधु निकले. उन्होंने अतिथि का स्वागत

किया. उसे पानी पिलाया. आराम करने को कहा. राजा आश्चर्य चकित हो रहा था. उसने साधुओं से दोनों तोते का हाल कहा. साधुओं ने कहा यह दोनों तोते सगे भाई हैं. एक ही पेड़ पर दोनों ने अपना बचपन बिताया. एक दिन तेज तूफान आया. पेड़ टूट गया. सभी पक्षी इधर उधर जा गिरे और बिछड़ गए. एक तोता चोरों के पास जा पहुंचा और दूसरा तोता आश्रम में. इस तरह एक चोरों के यहां पला और दूसरा साधुओं के यहां. दोनों ने जैसा वातावरण देखा वैसे ही बातें सीख लीं. यह इनका दोष नहीं इनकी संगति का फल है. जो मनुष्य जैसे लोगों के बीच रहता है वैसा ही सीखता है.

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जैसी संगति वैसे ही उसका असर होता है.

सुरभि और पीहू

लेखक - ढ़ालेंद्र साहू

बहुत पुरानी बात है. एक गांव में एक मजदूर परिवार रहता था. परिवार में रामू, उसकी पत्नी वन्दना और दो प्यारे बच्चे - पीयूष और सुरभि थे. उनके साथ एक बकरी का बच्चा भी रहता था, जिसका नाम पीहू था. सब साथ में हंसी-खुशी रहते थे. पीयूष 5 साल का था और उसकी बहन सुरभि 2 साल की थी. सुरभि दिन भर पीहू के साथ खेलती और उसका बहुत खयाल रखती. उसे साथ खाना खिलाती और साथ ही सुलाती भी थी. परन्तु घर के अन्य लोग सुरभि के बकरी के बच्चे के प्रति इस लगाव को पसंद नहीं करते थे. खासकर पिता रामू को सुरभि का पीहू (बकरी के बच्चे) के साथ रहना पसंद नहीं था. वह उसे बेचना चाहता था पर सुरभि की ज़िद के आगे वह कुछ नही कर पाता था. रामू पास के ही गांव के ज़मींदार के घर मजदूरी का काम करता था और सुरभि की माँ घर का काम करती थी. उनकी जिंदगी हंसी-

खुशी बीत रही थी. बरसात का मौसम था. गांव में बहुत बारिश हुई और पास की नदी में बाढ़ आ गयी. बाढ़ का पानी गांव में आ गया. चारों ओर अफ़रातफ़री मच गई. सब अपनी जान बचाने के लिए अपना-अपना सामान लेकर ऊँचाई वाली जगह की ओर जाने लगे, ताकि उनकी जान बच जाए. पानी धीरे-धीरे बढ़ रहा था. रामू भी अपने परिवार के साथ दूसरे स्थान की ओर जा रहा था. थोड़ी देर में सब एक सुरक्षित स्थान पर पहुँच गए और वहां अपने रहने की व्यवस्था करने लगे. तभी अचानक सुरभि को बकरी पीहू की याद आयी जो पुराने घर में ही छूट गयी थी. वह बहुत रोने लगी और अपने पिता से पीहू (बकरी के बच्चे) को लाने की जिद करने लगी. पिता के बहुत मनाने पर भी वह न मानी. हारकर पिता वापस जान जोखिम में डालकर उस बकरी के बच्चे को ले आये. सुरभि ने उसे गले से लगा लिया और प्यार से उसे सहलाने लगी. दिन बीतते गए. बाढ़ का पानी सूख गया और सब वापस अपने पुराने घरों में लौट आये. जिंदगी फिर से सामान्य हो गयी. एक रात रामू अपने परिवार के साथ सो रहा था. तभी उनके घर में एक जहरीला सांप घुस आया. सांप धीरे-धीरे उनकी ओर बढ़ रहा था. तभी उनको पीहू के जोर-जोर से मिमियाने की आवाज आई. रामू की नींद खुल गयी. उसने सांप को देख कर तुरंत पास पड़े डंडे से उसे घर से दूर भगाया. तब उसकी जान में जान आयी. रामू को तब एहसास हुआ कि अगर पीहू के शोर से उसकी नींद नही खुलती तो कोई अनहोनी हो जाती. वह तुरंत पीहू के पास गया और उसे गोद में उठाकर बहुत लाड़ करने लगा. यह सब पूरा परिवार देख रहा था. सब के सब पीहू के पास आकर उसे लाड़ करने लगे. रामू और वन्दना को इस बात का एहसास हुआ कि अबोध जानवर भी प्रेम व स्नेह के भूखे होते हैं और समय आने पर वही स्नेह सूद समेत लौटाते हैं. जैसे पीहू ने सबकी जान बचाकर लौटाया.

हाँ मैं बच्चा तो ही हूँ जो ऐसा कर सकता हूँ

लेखक - निशांत शर्मा

9 महीने माँ की कोख में पलकर जब बाहर रोते-रोते आया पर पूरे रिश्तेदारों सहित अपने माँ बाप को हँसाया. मैं बच्चा ही तो हूँ जो ऐसा कर सकता हूँ.

थोड़ा बड़ा हुआ तो अपने नटखट शैतानियों और मस्तियों से दादा-दादी, मम्मी-पापा और सब को हँसाया. मैं बच्चा ही तो हूँ जो ऐसा कर सकता हूँ.

मेरे बड़े से दादा दादी पापा मम्मी को आसानी से अपने लिए कभी घोड़ा कभी ऊँट कभी मोर कभी गाय बनवाया. मैं बच्चा ही तो हूँ जो ऐसा कर सकता हूँ.

मेरे जन्मदिन पर घर के सभी लोगों को मेरे साथ सुंदर-सुंदर नए कपड़े पहनवाक़र, गुब्बारे फुलवाकर प्यारा सा केक कटवाकर हसीन दावत का लुफ्त उठवाया. मैं बच्चा ही तो हूँ जो ऐसा कर सकता हूँ.

मेरे हॉस्टल में दाखिले के समय सबकी आंखों में पानी लाया और मन ही मन सबको रुलाया. मैं बच्चा ही तो हूँ जो ऐसा कर सकता हूँ.

दादा के जन्मदिन में उनको प्यारा सा चश्मा देकर तो दादी के जन्मदिन पर बनारसी साड़ी देकर, पापा को मोबाइल देकर तो मम्मी को अंगूठी देकर उन सभी के मन को खिलखिलाया. मैं बच्चा ही तो हूँ जो ऐसा कर सकता हूँ.

मम्मी के गुस्सा होने पर उन्हें फुसलाया तो कभी पापा के गुस्सा होने पर उन्हें बहलाया. मैं बच्चा ही तो हूँ जो ऐसा कर सकता हूँ.

स्कूल में अपने व्यक्तित्व और गतिविधियों से माँ बाप और शिक्षकों का मान और अभिमान बढ़ाया. मैं बच्चा ही तो हूँ जो ऐसा कर सकता हूँ.

कॉलेज आते-आते लगता हैं मगर अब मैं बड़ा हो गया हूँ क्योंकि कुछ सवाल जो मन में चलते है कि कॉलेज के बाद जॉब की टेंशन उसके बाद शादी की टेंशन. सेटल होने की टेंशन. पर कितना भी बड़ा क्यों न हो जाऊं अपने भीतर एक बच्चा हमेशा रखूंगा.

क्योंकि मैं बच्चा ही तो हूँ जो ऐसा कर सकता हूँ.

कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिए दी थी -

हाथी और गौरैया

किसी पेड़ पर एक गौरैया अपने पति के साथ रहती थी. वह अपने घोंसले में अंडों से चूजों के निकलने का बेसब्री से इंतज़ार कर रही थी. एक दिन की बात है गौरैया अपने अंडों को से रही थी और उसका पति भी रोज की तरह खाने के इन्तेजाम के लिए बाहर गया हुआ था.

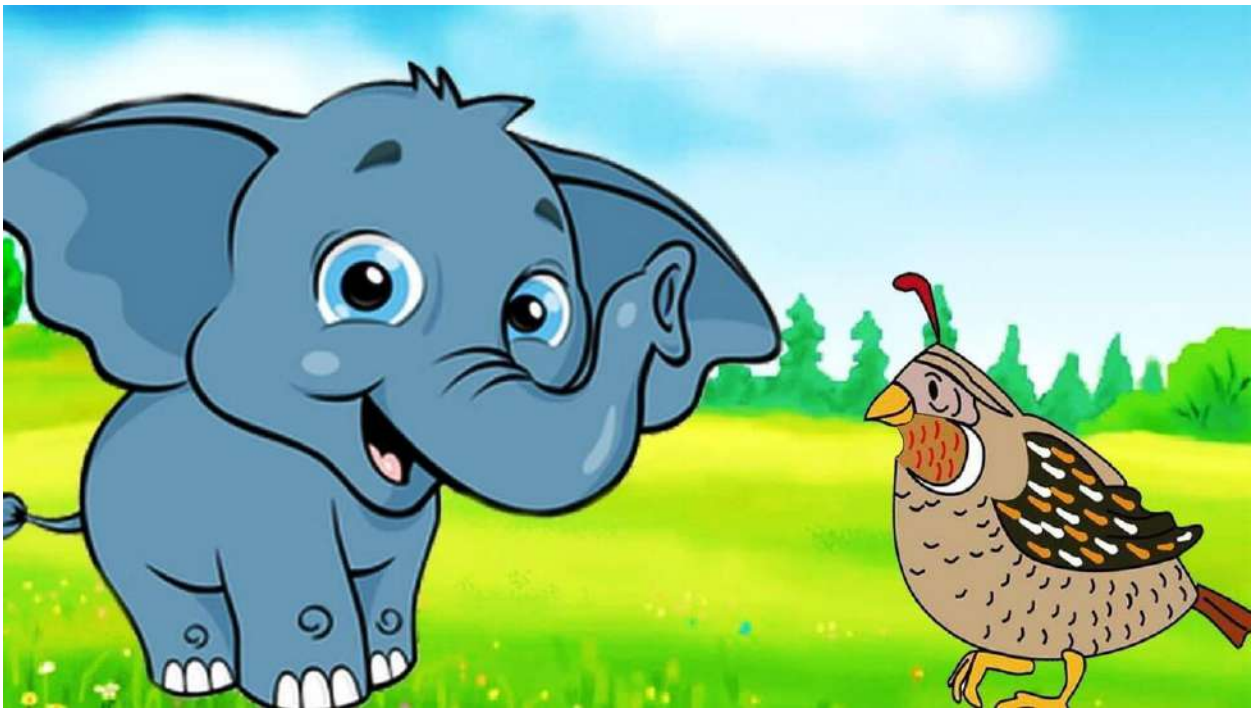

तभी वहां एक गुस्सैल हाथी आया और आस-पास के पेड़ पौधों को रौंदते हुए तोड़-फोड़ करने लगा. उसी तोड़ फोड़ के दौरान वह गौरैया के पेड़ तक भी पहुंचा और उसने पेड़ को गिराने के लिए उसे जोर-जोर से हिलाया. पेड़ काफी मजबूत था इसलिए हाथी पेड़ को तो नहीं तोड़ पाया और वहां से चला गया, लेकिन उसके हिलाने से गौरैया का घोसला टूटकर नीचे आ गिरा और उसके सारे अंडे फूट गए.

गौरैया बहुत दुखी हुयी और जोर जोर से रोने लगी. तभी उसका पति भी वापस आ गया. वह भी बेचारा बहुत दुखी हुआ और उन्होंने हाथी से बदला लेने और उसे सबक सिखाने का फैसला किया. वे अपने मित्र कठफोड़वा के पास पहुंचे और उसे सारी बात बताई.

हमे बहुत से लागों ने यह कहानी पूरी करके भेजी है. उनमें से कुछ हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

संतोष कुमार कौशिक व्दारा पूरी की गई कहानी

कठफोड़वा ने अपने मित्र से धीरज रखने को कहा - ''देखो मित्रों इस दुनिया में कोई भी व्यक्ति अच्छा बुरा कर्म करता है कर्म के अनुसार उसको फल भोगना पड़ता है. हम हाथी को सबक ज़रूर सिखाएंगे. रानी मधुमक्खी मेरी मित्र है. उससे इस संबंध में बात करूंगा.'' यह कहकर कठफोड़वा रानी मधुमक्खी के पास गया और उसे गौरैया व उसके पति के साथ हाथी व्दारा किए गए अत्याचार के बारे में बताया. सुनकर मधुमक्खी क्रोधित हो गई. उसने अपने दोस्त कठफोड़वा से कहा - "हम सब हाथी को सबक सिखाने के लिए बैठक करके योजना बनाते हैं. योजना अनुसार कार्य करेंगे तो निश्चित ही अपने कार्य में सफल होंगे."

इस तरह गौरैया, उसके पति, कठफोड़वा व रानी मधुमक्खी बैठक कर एक योजना बनाते हैं. हाथी को सबक सिखाने के लिए आने वाले दिन को निर्धारित किया जाता है.

रोज की तरह हाथी एक पेड़ के नीचे आराम करने के लिए आता है. उसी समय योजना के अनुसार रानी मधुमक्खी अपने पूरे परिवार के साथ हाथी पर हमला करके

काटना शुरू कर देती है. हाथी मधुमक्खियों से परेशान होकर इधर-उधर भागने की कोशिश करता है. जैसे ही हाथी भागता है वैसे ही अवसर देखकर कठफोड़वा उसकी एक आंख को चोंच मार कर फोड़ देता है. हाथी तिलमिला जाता है और सोचता है कि - ''हे भगवान-मुझे किस चीज का कष्ट मिल रहा है.'' तभी वहां गौरैया की आवाज सुनाई पड़ता है - ''जैसा कर्म करोगे, वैसा फल पाओगे.'' हाथी को समझ में आ जाता है कि गौरैया उस दिन का बदला मुझसे ले रही है. हाथी गौरैया से बार-बार क्षमा याचना करता है. कठफोड़वा इधर उसकी दूसरी आंख को फोड़ने वाला ही रहता है, उसी समय गौरिया कहती है - ''रुको कठफोड़वा भैया अब जो मेरे अण्डे नष्ट हो गये हैं वह वापस नहीं आने वाले हैं. हाथी को अपने किए की सजा उसकी एक आंख देकर चुकानी पड़ी. जब भी हाथी को देखने में असुविधा होगी तो हमें जरूर याद करेगा. उसे मधुमक्खियों ने भी उसे किए की सजा दे दी है. उसकी दूसरी आंख फोड़ोगे तो अपने किए का प्रायश्चित नहीं कर पाएगा. भैया इसे क्षमा कर दो. रानी मधुमक्खी बहन आप भी क्षमा कर दो. शायद हाथी को अपनी गलती का एहसास हो गया है.''

इधर हाथी अपने कार्यों पर शर्मिंदा होकर गौरैया, उसके पति, कठफोड़वा और रानी मधुमक्खी के पास पहुंचकर बार-बार हाथ जोड़कर क्षमा मांगता है. उसको सभी लोग क्षमा कर देते हैं. अब सब जंगल में एक परिवार की तरह खुशी-खुशी जीवन व्यतीत करते हैं.

सीख - हमें मिल-जुल कर कार्य करना चाहिए. मिलकर कार्य करने से बड़े से बड़ा कार्य भी पूर्ण हो जाता है. यदि किसी से जाने अनजाने में गलती हो जाती है तो उसे एक बार सुधरने का अवसर जरूर देना चाहिए.

इंद्रभान सिंह कंवर व्दारा पूरी की गई कहानी

तब वे सब मिलकर उसे सबक सिखाने की सोचते हैं. एक दिन मस्त मौला हाथी अपनी मस्ती में चूर होकर जंगल में घूमते दौड़ते रहता है. दौड़ते हुए शिकारी व्दारा बनाए गए गड्ढे में गिर जाता है और जोर-जोर से बचाओ बचाओ की आवाज लगाता है, मगर उसकी आवाज को कोई नहीं सुनता.

तभी वहां से गौरैया चिड़िया गुजरती है और चिल्लाते हुए हाथी की आवाज सुन लेती है. तब नजदीक जाकर देखती है. हाथी वहां अपनी जान बचाने तथा गड्ढे से बाहर आने के लिए झटपटाता रहता है. तब गौरैया को हाथी व्दारा की करतूतों की याद आ जाती है मगर उसके अंदर की दया भाव व ममता उसे हाथी को बचाने को कहती है. वह सब कुछ भूल कर हाथी को बचाने के लिए मदद करने हेतु जंगल के अन्य जानवरों को जल्दी से बुलाती है.

फिर सभी जानवर वहां हाथी को बचाने के लिए इकट्ठे होते हैं. सब मिलकर हाथी को गड्ढे से बाहर निकालते हैं तथा उसकी जान बचाते हैं. उसी समय कठफोड़वा चिड़िया भी वहां पर मौजूद रहती है. वह हाथी को याद दिलाती है, कि आज तुम जिस गौरैया के कारण बच पाए एक दिन तुम ने ही उसका पूरा घर उजाड़ दिया था उसके अंडे फोड़ दिए थे. और भी न जाने कितनों को परेशान किया था. फिर भी उसने

तुम्हारी जान बचाने के लिए जंगल के सभी जानवरों को इकट्ठा किया और सभी ने मिलकर तुम्हारी जान बचाई, क्योंकि यह सभी जंगल में रहने वाले जीव जंतुओं को अपना परिवार मानते हैं. मगर तुम इन सब को अपना परिवार नहीं मानते. यह सब जानकर हाथी को पछतावा होता है और वह गौरैया तथा जंगल के सभी जानवरों से अपनी करतूतों की माफी मांगता है और आगे से अच्छा बनकर रहने का वचन देता है.

सीख- हमें सदैव सभी के साथ मिल जुल कर रहना चाहिए तथा अच्छा व्यवहार करना चाहिए, क्योंकि हम सब का जीवन एक दूसरे के सहयोग पर ही आधारित होता है.

अगले अंक के लिये अधूरी कहानी -

<u>लोमड़ी और बकरी</u>

एक समय की बात है, एक लोमड़ी घूमते-घूमते एक कुएं के पास पहुंच गई। कुएं की जगत नहीं थी. उधर, लोमड़ी ने भी इस और ध्यान नहीं दिया. परिणाम यह हुआ कि बेचारी लोमड़ी कुएं में गिर गई.

कुआं अधिक गहरा तो नहीं था, परंतु फिर भी लोमड़ी के लिए उससे बाहर निकलना सम्भव नहीं था. लोमड़ी अपनी पूरी शक्ति लगाकर कुएं से बाहर आने के लिए उछल रही थी, परंतु उसे सफलता नहीं मिल रही थी. अंत में लोमड़ी थक गई और निराश होकर एकटक ऊपर देखने लगी कि शायद उसे कोई सहायता मिल जाए.

लोमड़ी का भाग्य देखिए, तभी कुएं के पास से एक बकरी गुजरी. उसके कुएं के भीतर झांका तो लोमड़ी को वहां देखकर हैरान रह गई.

“नमस्ते, लोमड़ी जी!” बकरी बोली- “यह कुएं में क्या कर रही हो?”

“नमस्ते, बकरी जी!” लोमड़ी ने उत्तर दिया- “यहां कुएं में बहुत मजा आ रहा है.“

अब इस अधूरी कहानी को जल्दी से पूरा करके हमें भेज दो. कहानी भेजने का ई-मेल है - dr.alokshukla@gmail.com. कहानी तुम वाट्सएप से 7000727568 पर भी भेज सकते हो. सभी अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -

इस चित्र पर हमें कई मज़ेदार कहानियां मिली हैं, जिन्हें हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

लालच बुरी बला है

लेखक - ढ़ालेंद्र साहू

एक कुत्ता अपने मुंह में हड्डी दबाकर तालाब के किनारे से गुजर रहा था. तभी उसकी नज़र तालाब में एक और कुत्ते पर पड़ी जो उसी की तरह मुंह में हड्डी दबाकर उसके साथ चल रहा था. वास्तव में वह उसकी परछाई थी. कुत्ता लालची था. वह तालाब के और पास गया और अपनी परछाई को दूसरा कुत्ता समझकर उसके मुंह की हड्डी

छीनने के लालच में तालाब में कूद गया. तालाब में कूदते ही उसने अपना मुंह खोला जिससे उसके मुंह की हड्डी भी तालाब में गिर गयी और कुत्ते के मुंह कुछ नहीं लगा.

घमंडी कुता

लेखिका - प्रतिभा त्रिपाठी

एक मुहल्ले में एक घमंडी कुता था. वह गली के अन्य कुत्तों व लोगों को परेशान करता था. उसे सबक सिखाने हेतु एक प्रतियोगिता रखी गई. तय हुआ कि जो कुत्ता उसे जीतेगा गली का राजा बना दिया जाएगा. एक गड्ढ़ा बनाकर उसमें पानी भरा गया एवं कुत्तों को वहां कुश्ती लड़ने के लिए आमंत्रित किया गया. जैसे ही वह कुत्ता लड़ने के लिये गड्ढ़े में कूदा वह डूबने लगा. उसने अन्य लोगों को मदद के लिए पुकारा. जब किसी ने उसकी मदद नहीं की तब उसने सबसे माफी मांगी और कहा कि अब मैं सब के साथ मिल-जुल कर रहूंगा.

सीख - हमें किसी भी चीज का कभी घमंड नहीं करना चाहिए.

बहादुर कुत्ता

लेखक - संतोष कुमार कौशिक

श्यामू नाम का एक किसान था. उसका छोटा परिवार था. श्यामू उसकी पत्नी और उसके एक बेटा व एक बेटी थे. श्यामू दिन भर कृषि कार्य में व्यस्त रहता था. उसका साथ उसका कुत्ता मोती देता था. मोती बहुत वफादार था. वह अपने मालिक के साथ सुबह से शाम तक रहता था. जब श्यामू घर आता तो मोती भी उसके पीछे-पीछे

आता. श्यामू जब भोजन करता तो मोती का भी ख्याल रखता था. उसे भी भोजन देता था. श्यामू का परिवार शुध्द शाकाहारी था और कुत्ता भी शाकाहारी भोजन करता था.

एक दिन श्यामू गांव से बाहर गया. मोती घर में ही था. मोती ने देखा बहुत सारे कुत्ते घर के सामने से गुज़र रहे हैं. उसने सोचा, मैं भी आज इन लोगों के साथ सैर कर लेता हूं. मेरे मालिक भी नहीं है और मेरे मालिक के बच्चे भी कहीं चले गए हैं. ऐसा सोच कर वह अन्य कुत्तों के साथ जंगल की ओर चला गया. घूमते-घूमते शाम होने को आई. मोती को भूख सताने लगी. बाकी कुत्ते भी भोजन की तलाश में जुट गए. अचानक किसी जानवर की हड्डियां नज़र आईं. सभी कुत्ते दौड़े. सभी ने एक-एक हड्डी खाने के लिए मुंह में रख ली और घर की ओर भागने लगे. संगति का प्रभाव तो पड़ता ही है. मोती ने भी सब कुत्तों को देखकर एक हड्डी अपने मुंह में रख ली. उसे जोर से उसे प्यास लगी थी. वह पानी पीने के लिए नदी के पास चला गया. नदी में जैसे ही वह पानी की तरह झुका, उसे पानी में उसका खुद का प्रतिबिंब दिखाई दिया. प्रतिबिंबित मुंह में हड्डी को देखकर मोती सोचने लगा- "इस सूखी हड्डी में क्या रखा है. इसमें ना मांस है न स्वाद है. मेरा मालिक देखेगा तो मुझे मार डालेगा." यह सोचकर उसने मुंह की हड्डी को नदी में गिरा दिया. उसी समय अचानक नदी में कोई बहता हुआ व्यक्ति आ रहा था. मोती का ध्यान उस ओर गया. उसने ध्यान से देखता कि वह व्यक्ति उसके मालिक का लड़का है. मोती अपनी जान की परवाह किए बिना मालिक के लड़के को बचाने के लिए नदी में छलांग मार देता है. दोनों नदी में बहते हुए धीरे-धीरे किनारे की ओर पहुंच जाते हैं और दोनों बच जाते हैं.

वापस घर आ कर श्यामू के लड़के ने अपनी मां एवं पिताजी को सारी घटना के बारे में जानकारी दी. घटना को सुनकर मोती के प्रति घर के सभी लोगों का प्यार और बढ़ जाता है. सब एक परिवार की तरह खुशी-खुशी जीवन बिताते हैं.

शिक्षा - जो हमारा पालन पोषण करता है, उसकी हमें भी सहायता करना चाहिए.

<u>डॉगी फिर बना उल्लू</u>

लेखक - इंद्रभान सिंह कंवर

एक बार एक डॉगी को कहीं से हड्डी का टुकड़ा मिलता है, जिसे पाकर वह बेहद खुश होकर इधर-उधर दौड़ने लगता है. उसे लेकर वह अपने घर की ओर चल पड़ता है. चलते-चलते उसे प्यास लगती है. पानी पीने वह नदी किनारे चल पड़ता है. हड्डी को मुंह में दबाए वह नदी किनारे पानी पीने के लिए जाता है. नदी के अंदर झांकता है, तो उसे एक और उसी के जैसे डॉगी हड्डी मुंह में दबाए नदी के अंदर दिखाई देता है. उसे देखकर उसके मन में लालच आ जाता है. काश दोनों हड्डी मुझे मिल जाएं तो मैं बड़े आराम से दोनों को खा सकूंगा.

वह ऐसा सोचता ही रहता है, कि अचानक उसे उस कुत्ते की कहानी याद आ जाती है जिसमें एक कुत्ता पानी के अंदर के डॉगी को देखकर भौंकता है, और हड्डी उसके मुंह से निकल कर पानी में गिर जाती है और उसे कुछ नहीं प्राप्त होता है. डॉगी अपने आप को चालाक समझते हुए सोचता है, कि मैं उसकी तरह बेवकूफ थोड़ी ना हूं. मैं

भौंकूंगा नहीं मैं. हड्डी यहीं नदी किनारे रख देता हूं और नदी के अंदर से डॉगी से हड्डी छीन कर बाहर ले आता हूं, और दोनों हड्डी को मजे से खाऊंगा.

ऐसा सोचकर वह नदी किनारे अपने मुंह की हड्डी को छोड़कर नदी में छपाक से कूद जाता है. यह सब नजारा एक गिद्ध देखते रहता है. वह मौका पाकर हड्डी को लेकर भाग जाता है. डॉगी देखता ही रह जाता है. वह अपने आप को कोसते हुए सेचता है कि उसकी बेवकूफी से ना तो नदी के अंदर की हड्डी उसको मिल सकी और न ही वह अपनी हड्डी को बचा पाया. इस तरह से एक और डॉगी उल्लू बन गया.

सीख - हमें लालच नहीं करना चाहिए. बेवकूफ लोग हमेशा अपने आप को अधिक होशियार समझते हैं जबकि वह वास्तव में बेवकूफ होते हैं.

इस बार हमें कहानियों के साथ इस चित्र पर एक कविता भी मिली है जिसे हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं.

<u>चित्र कविता - लालची कुत्ता</u>

लेखक - संतोष कुमार कौशिक

टॉमी नाम का कुत्ता था।

इधर-उधर वह घूमता था।।

वह मोहल्ले में रहता अकेला।

कोई देता रोटी कोई देता केला।।

रोज उसे रोज मिलता स्वादिष्ट खाना।

फिर भी लोगों को नहीं छोड़ता डराना।।

एक दिन मोहल्ले वालों को सोचना पड़ा।

हमारा खाकर, हमसे बन रहा है बड़ा।।

कुत्ते को सबक सिखाने की पारी आई।

मोहल्ले वालों ने तुरंत बैठक बुलाई।।

बैठक में बात हुई भोजन नहीं देना है, इसको।

अब हमें देखना है, भौंकता है किसको।।

मानी नहीं हार उसने, सोची एक तरकीब।

कसाई की दुकान के, वह है करीब।।

कुत्ता पहुंचा दुकान में, मुंह में पानी आया।

कसाई ने एक हड्डी फेंकी, कुत्ते को खिलाया।।

हड्डी लेकर चले नवाब।

रास्ते में मिला बड़ा तालाब।।

कुत्ता को थी प्यास लगी, सोचा पानी पी लूं।

फिर चैन से बैठकर, हड्डी को चबा लूं।।

पीने के लिए वह पानी की तरफ झुका।

उस पानी में खुद की परछाई दिखा।।

परछाई को वह समझ ना पाया।

लालच में वह कुत्ता आया।।

उसे लगा कुत्ता एक है, पानी में।

मजेदार हड्डी इसके अंदर, मुंह में।।

भौं-भौं लगा जो करने।

मुंह की हड्डी गिरी पानी में।।

लालच करना बुरी बला है।

हुआ न इससे कभी भला है।।

यूं लालच तुम कभी न करना।

बाद में पछताओगे वरना।।

सीख

जो चीजें पास हैं हमारे।

उनका ख्याल रखना प्यारे।।

अब नीचे दिये चित्र को देखकर कहानी लिखें और हमें वाट्सएप व्दारा 7000727568 पर अथवा ई-मेल से dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दें. अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले में प्रकाशित करेंगे.

अगहन बिरसपति के पूजा

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

हिन्दू पंचाग मा अगहन महीना के बहुत महत्व हे. कातिक मास के बाद अगहन मास में बिरस्पत (गुरुवार) के दिन अगहन बिरसपति के पूजा करे जाथे. बिरसपति देव के पूजा करे ले घर मा सुख शांति, समृध्दि, धन वैभव अउ सबो मनोकामना पूरा हो जाथे.

पूजा के तैयारी - अगहन बिरसपति पूजा के तैयारी ल बुधवार के साँझकुन ले ही शुरु कर देथे. सबले पहिली घर दुवार, अँगना, खोर ला बढ़िया लीप बहार के साफ सुथरा करे जाथे. घर के बाहिर दरवाजा मा बढ़िया रंगोली बनाय जाथे. घर मा लक्ष्मी माता के आसन बनाय जाथे. लक्ष्मी दाई के पाँव बनाय जाथे. घर ल तोरण पताका से सजाय जाथे.

<u>लक्ष्मी माता के आसन</u> - अगहन बिरसपति के दिन बृहस्पति देव अउ लक्ष्मी माता के चित्र आसन मा रखे जाथे. आसन के तीर मा रखिया, अँवरा (आँवला), अँवरा के डारा, केरा पत्ती, धान के बाली आदि सामान रखे जाथे. ये पूजा मा रखिया अउ अँवरा के बहुत महत्व हे. एकर अलावा गेंदा के फूल, पीला चाँऊर, चना,पीला कपड़ा अउ मीठा पकवान रखे जाथे. पूजा के बाद मँझनिया (दोपहर) कुन कथा सुने जाथे तभे पूजा पूरा होथे. पूजा पाठ करे के बाद प्रसाद बाँटे जाथे.

<u>बिरसपति देव के कथा</u> - बहुत दिन के बात हरे. एक राज्य मा एक बहुत प्रतापी अउ दानी राजा राज करत रिहिसे. वोहा रोज गरीब मन ल दान देवय अउ ओकर सहायता करे. फेर ये बात ह रानी ल अच्छा नइ लगत रिहिसे. वोहा न तो कभू दान देवय न काकरो सहायता करे. एक दिन राजा ह शिकार करे बर जंगल गे रिहिसे, उही बेरा भगवान बृहस्पति देव ह साधु के भेष मा महल मा भिक्षा माँगे बर आइस. रानी ह भिक्षा देबर इंकार कर दीस, अउ बोलथे - हे साधु महराज मेहा तो राजा के दान पून करे ले तंग आ गे हँव. रोज के रोज दान करत रहिथे. आप ह मोला कुछु अइसे उपाय बतावव जेकर से ये सब धन दौलत ह खतम हो जाये. न रहे बाँस न बजे बाँसुरी. ताकि मेंहा चैन से रहि सँकव. साधु महराज बोलथे - रानी तेंहा तो अजीब बात करत हस. आज तक तो कोनों धन दौलत से दुखी नइ होय हे. फेर ते तो उल्टा बोलत हस. रानी बोलीस के - हाँ महराज मँय सचमुच में तंग आ गे हँव. तब साधु महराज बोलथे कि अइसे करबे बिरस्पत के दिन घर ल लीपबे पोतबे, पीला माटी से केश धोबे, माँस मदिरा के सेवन करबे, धोबी ल कपड़ा धोय बर देबे. अइसे करे ले सब धन ह नष्ट हो जाही. जइसे ही साधु महराज गीस रानी ह ओइसने करे ल धर लीस. बिरस्पत के दिन माँस मदिरा खाय के शुरु कर दीस. धीरे-धीरे सब धन दौलत

कम होय ल धर दीस. तीन बिरस्पत बीते के बाद राजा के सबो धन नष्ट हो गे. राजा रानी के ऊपर भारी विपत्ती आ गे. राजा रानी बहुत गरीब हो गे. खाय पीये बर तरसे लगीस. ये सब ल देख के राजा ह काम करे बर दूसर देश चल दीस. एक दिन रानी ह अपन दासी ल बोलीस के पास के नगर मा मोर बहिनी रहिथे. वोहा अब्बड़ धनवान हे. ओकर तीर ले कुछ अनाज माँग के ले आतेस त हमर कुछ दिन के गुजर बसर चल जाही. दासी ह ओकर बात मान के रानी के बहिनी के घर मा गीस. वो दिन बिरस्पत रिहिसे. रानी के बहिनी बृहस्पति देव के कथा सुनत रिहिसे. दासी ह रानी के संदेश ल ओकर बहिनी ल बताइस. फेर ओकर बहिनी ह कुछु जवाब नइ दीस. दासी ह वापिस आ के रानी ल बताइस. रानी ह बहुत दुखी होइस. रानी के बहिनी ह पूजा पाठ पूरा करके जब उठीस त ओहा सीधा रानी के महल मा गीस, अउ बोलीस - मेंहा बृहस्पति देव के कथा सुनत रेहेंव तेकर सेती दासी ले कुछु नइ बोलेंव. का बात हे अब बता. दासी काबर गे रिहिसे? तब रानी ह अपन बहिनी ल सब बात ल बताइस अउ दुख ल सुनाइस. तब रानी के बहिनी ह बृहस्पति देव के पूजा करे के सलाह दीस अउ सब विधि-विधान ला बताइस. रानी ह ओकर बात मान के बृहस्पति देव के विधि-विधान से पूजा करे ल धरलीस. धीरे- धीरे ओकर घर मा धन संपत्ति बाढत गीस. कुछ दिन बाद राजा भी घर मा आ गे. अब राजा अउ रानी सुख से रहे ला धर लीस. फिर से दान पुन करे ला धर लीस. ये कथा ला सुने से सब प्रकार के मनोकामना पूरा होथे , अउ घर मा लक्ष्मी के वास होथे. बोलो बृहस्पति देव भगवान की जय.

<u>विज्ञान कहानी - खाद्य श्रृंखला</u>

लेखक एवं चित्र - पेशवर यादव भाठीगढ़

एक गांव में किसान रहता था. वह खेती-बाड़ी के साथ पशुपालन एंव मुर्गीपालन भी करता था. एक दिन उसने बाड़ी में बहुत सारी सब्जियों के बीज बोये. कुछ दिन बाद बीज से नए-नए पौधे निकल आये. पौधे सूर्य के प्रकाश से भोजन बनाते, अंगडाई लेते, गति करते और खेलते-कूदते. पौधों की दिनचर्या इसी प्रकार चल रही थी. धीरे-धीरे पौधे फूलने-फलने लगे. बाड़ी में हरियाली ही हरियाली थी. पौधे की हरियाली देख किसान के दिल में भी हरियाली थी.

एक दो दिन बाद पौधों की हरियाली एवं फूलों की महक से कीड़े-मकोड़े, कीट-पतंगे, रंग-बिरंगी तितलियां और भौरें बाड़ी में गुनगुनाने लगे. किसान यह सब देखकर बहुत चिंतित हुआ. उसे सब्ज़ियों के भारी नुकसान होने का डर सताने लगा. उसने एक

उपाय सोचा. उसने मुर्गियों को सब्ज़ी की बाड़ी में स्वतंत्र रूप से छोड़ दिया. इससे मुर्गियों को भी खाना मिला और सब्जियों की फसल भी सुरक्षित हो गई.

इस तरह से कुछ दिन बाद किसान को सब्ज़ियों से बहुत मुनाफा हुआ. किसान खुश होकर इस मुनाफे से और बहुत सारी मुर्गियां बाज़ार से खरीद लाया. किसान को मुर्गी से अंडे मिले, मांस मिला और बाड़ी के लिए पर्याप्त मात्रा में खाद भी मिला. किसान की आय में बहुत बृध्दि हुई.

समय बीतता गया. किसान की मुर्गियों की संख्या भी बढ़ती गयी. धीरे-धीरे मुर्गियों के रहन-सहन में भी परिवर्तन होने लगा. मुर्गियों को कम दाना मिलने लगा. संख्या बढ़ने से मुर्गियों को बाड़े के अंदर विचरण करने में समस्या होने लगी. गर्मियों का मौसम आने लगा. मुर्गियां दाने की तलाश में बाड़ी से बाहर आने लगीं. वे स्वच्छंद विचरण करते हुए दाना चुगकर शाम होते ही बाड़ी की ओर चली जातीं. इस तरह मुर्गियों का दल बहुत खुश था. एक दिन, दोपहर में बहुत सारे सियार जंगल से किसान की बाड़ी में आ धमके. मुर्गियां बाड़ी से बाहर विचरण कर रही थीं. मुर्गियां सियार को देखकर भय से भागम-भाग करने लगीं पर सियार के सामने उनकी एक न चली. अंततः सभी मुर्गियां मारी गई, जिससे किसान को भारी नुकसान हुआ. किसान को समझ आ गया था कि पर्याप्त संसाधन के बिना कोई भी कार्य को नहीं करना चाहिए.

चम्पा अउ चमेली

लेखिका - प्रिया देवांगन प्रियू

एक गाँव में दू झन बहिनी रिहिसे , चम्पा अउ एक के नाम चमेली. चम्पा के दाई सौतेली रिहिसे. चम्पा बहुत घमंडी रिहिसे. चमेली के स्वभाव बहुत शांत रिहिसे. चमेली के दाई चमेली ला बिल्कुल भी पसन्द नई करत रिहिसे. चम्पा ला बहुत प्यार करे. चम्पा के दाई चम्पा ला कोई काम नई करवाये. सब काम ला चमेली हा करे.

चमेली रोज गॉव से बाहिर पानी भरे ला जाय. एक दिन के बात हरे, चमेली हा पानी भर के आवत रिहिसे, ता रस्ता मा एक डोकरी मिलिसे. डोकरी कहिस बेटी मोला पानी देदे, ता चमेली हा ओला पानी पिलाइसे. डोकरी बोली से भगवान तोर भला करे बेटी. तोर तो पानी खतम होंगे अब फिर से जाय ला परही. ता चमेली बोलिसे - कोई बात नहीं में चले जाहु. चमेली फिर से तालाब गिस, मटका में पानी भरिसे, तहान एक सुंदर से परी दीखीसे. चमेली देखते रहिगे. परी बोलिसे - रास्ता में जे डोकरी ला पानी पिलाहस ते महि हरो. मेहा जल परी हरो इही तालाब में रहिथो. तोला रोज देखतो, तेहा रोज पानी भरे ला आथस. में तोर काम से बहुत प्रसन्न हो तोला आशिर्वाद देवत हो. तोर घर पूरा सोना से भर जाही. जइसे-जइसे बोलत जाबे तोर

मुहु ले सोना निकलत जाही. चमेली खुश होके पानी के मटका ला धर के घर कोती गीस.

घर मे गीस त चमेली के माँ हा अब्बड़ गारी दिसे. पुछिसे कहा रेहेस अतका बेरा ले? फेर चमेली जइसे-जइसे अपन घटना ला बतावत जात रिहीसे वइसे-वइसे ओकर मुहु ले सोना चांदी अउ हीरा गिरत जात रिहिसे. येला देख के ओकर दाई खुश होंगे. अउ चमेली ला पुछिसे की येहा कइसे होइसे बेटी. चमेली बहुत खुश होके बताये ला लागिस की पहली बार मोला बेटी बोलिसे. ओकर बाद चम्पा ला आवाज लगाइस अउ बोलिसे की तहु ह पानी भरे ला जा अउ वो डोकरी के इंतजार करबे अउ पानी पियाबे.

चम्पा ह पानी भरे ला गिस अउ पानी भर के पेड़ के छाँव मे बईठे रिहिसे. थोकिन देर बाद एक बकरी चरवाहा आइस. अउ बोलिसे बेटी मोर बकरी ला प्यास लगत हे थोड़ा पानी देबे का. चम्पा बहुत घमंडी रिहिसे. बोलिसे - में कोनो जानवर बर पानी नई भरे हो. जेला प्यास लगत हे ओहा तालाब में जा के पी सकत हे. ओकर बाद बकरी वाला ह परी बनगे अउ बोलिसे की चम्पा तेहा बहुत घमंडी हरस. मेहा श्राप देवत हो कि जइसे तेहा मुहु खोलबे तोर मुहु ले पथरा गिरही.

चम्पा रोवत-रोवत घर गिस. दाई हा चम्पा ला पुछिसे का होंगे बेटी तोला काबर रोवत हस. चम्पा जइसे मुहु खोलिसे वइसे ओकर मुहु ले पथरा गिरत रिहिसे.रोवत -रोवत बताइस सबो कहानी ला. थोकिन देर बाद जल परी आइस अउ बताइस की चमेली ला मेहा आशिर्वाद देहो अउ चम्पा ला श्राप. चम्पा बहुत घमंडी हरे अउ ओकर दाई हा चमेली ला बहुत परेशान करथे. परी हा बताइस की चमेली बहुत अच्छा हावय. ओकर बाद चम्पा अउ ओकर दाई चमेली से अच्छा से बात करे ला धर लिसे. अउ हँसी खुशी मिलके रहे ला लागिस.

आये सर्दियों के प्यारे दिन

लेखक - चेतनारायण कश्यप

आये सर्दियों के प्यारे सुनहरे दिन

ठन्डी-गुनगुनी सुबह को जल्दी उठना

करना योग और व्यायाम

जो रखे शरीर और मन को निरोग

सर्दियों के प्यारे सुनहरे दिनों में

रंग-बिरंगे स्वेटर टोपी पहन कर

लगता है हमको अच्छा

सुबह-सुबह उठकर ठन्डे पानी में नहाना भी

लगता है हमको अच्छा

रोज़ सुबह-सुबह

हम निकलें विद्यालय जाने को

पगडंडी और खेतों के सहारे चलकर

स्कूल पहुंचना लगता है हमको अच्छा

सर्दियों के प्यारे सुनहरे प्यारे दिन

गणित

लेखक - भानुप्रताप कुंजाम अंशु

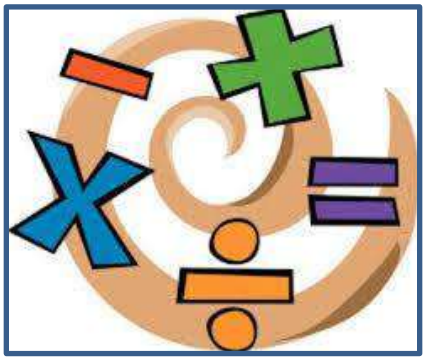

नहीं डरावना है गणित
बूढ़े बच्चे सबका मीत

है खेल सिर्फ जोड़-तोड़
मुश्किल नहीं माथा फोड़

हमें सिखाता जोड़ घटाना
खर्च करना और बचाना

भाग देना गुणा करना
किसी चीज को दुगना करना

सुन मेरे मुन्नू भाई
गणित हमारी है परछाई

जहाँ-जहाँ तुम जाओगे
साथ गणित को पाओगे

नहीं गणित से डरना तुम
गणित से दोस्ती करना तुम

I Want

Author - Tikeshwar Sinha Gabdiwala

She loves me so much
I want my mamma

I feel happiness in his arms
I want my dad

She calls me 'Ticku' with love
I want my sister

I gain knowledge in school
I want my teachers

I play with my friends
In the dust of the village

It's so pleasant
I like my village

I have got all these

I am proud of these

Only I want all these

Only I want all these

गरीबी में जीवन

लेखिका - श्वेता पाटनवार

एक बच्ची से पूछा मैंने
क्या हैं ख्वाब तुम्हारे
बच्ची बोली ख्वाब देखना
बस में नहीं हमारे

हम जिस कुटिया में रहते हैं
सड़क किनारे बनी हुई है
माटी धूल और कंकड़ों से
बस यह समझो सजी हुई है

महलों में रहने का ख्वाब
झोपड़ियों में सिमट गया है
और गरीबी की चादर सा
कसकर हमसे लिपट गया है

बच्ची कहती उससे पहले
बाबा आकर उसके बोले
नही बची है हिम्मत अब जो
वक्त से लड़ने बाजू खोलें

इन गरीब के बच्चों को भी
पढ़ने की इच्छा होती है
देख मगर पैसों की तंगी,
बच्ची कुछ भी नहीं कहती है

अंदर ही अन्दर घुट-घुट के
जीने की आदत पड़ जाती
लाख जतन किए हैं हमने
छोड़ गरीबी है कब जाती

गुरु घासीदास बाबा

लेखक - योगेश ध्रुव भीम, चित्र मनीषा सिंह

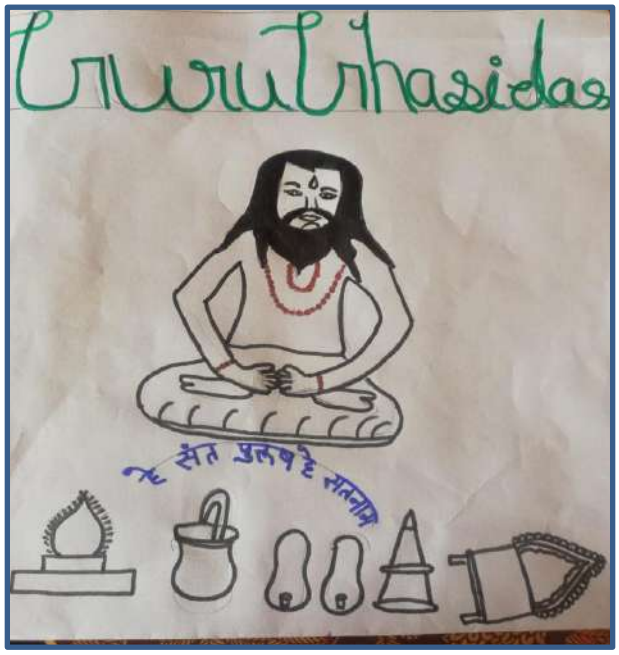

छत्तीसगढ़ के मोर पबितर भुइयां,
जनम धरे घलो तय गिरौदपुरी म |
महंगू अमरौतिन के ललना कहाय,
गुरु घासीदास बाबा जय होवय तोर ||

घोर अंधियारी कस बुराई बगरे,
मनखे मनखे के भेद तय मिटाए |
सत के रददा सबो ल घलो देखाय,
गुरु घासीदास बाबा जय होवय तोर||

छाता पहार औरा धौरा ठौर म,
घोर तप तेहर करे मोरे गुरु बाबा |
सत के दरसन घलो तय हर पाये,

गुरु घासीदास बाबा जय होवय तोर ||

सपुरा संग म तय बिहा रचाये,
मरे जीव ल जियाये मोरे बाबा |
अमरीत कुंड के पानी पियाये,
गुरु घासीदास बाबा जय होवय तोर||

गाय संग म झन फांदो नागर,
मांस मंदिरा के न कर तय सेवन |
मँझनिया बेरा झन जोतो भुइंया,
गुरु घासीदास बाबा जय होवय तोर||

समाज म तय घलो एकता बनाये,
आचरन ल बने सबो बनाओ संगी |
सतनाम भज तय पूजा घलो करले,
गुरु घासीदास बाबा जय होवय तोर ||

तय छुवाछुत के भेद ल घलो मिटाये,
सात ठन सत तय नियम बनाये |
वहू ह गुरु मोर सतनामी कहाय,
गुरु घासीदास बाबा जय होवय तोर ||

चिड़िया

लेखिका - प्रिया देवांगन प्रियू

छोटी सी चिडिया , फुदक फुदक कर आती है।

आंगन में बैठ कर , चीव चीव गीत सुनाती है।।

रानी सुबह उठ कर , दाना रोज खिलाती है।

चीव चीव कर के चिड़िया , दाना खाने आती है।।

रानी चिड़िया को देख कर , झट से उठ जाती है।

बच्चो के संग छोटी चिड़िया ,मीठी गीत सुनाती है।।

एक डाल से दूसरे डाल , उड़ उड़ कर जाती है।

मीठे मीठे फल खा कर , बहुत खुश हो जाती है।।

छत्तीसगढ़ के गांधी

पण्डित सुंदरलाल शर्मा के जन्म दिन २१ दिसंबर पर विशेष

लेखक - संतोष कुमार साहू प्रकृति

१

तै छत्तीसगढ़ के गांधी अस, तै छत्तीसगढ़ गांधी।।

न सोना नोहस न चांदी अस, तै छत्तीसगढ़ के गांधी।।

छत्तीसगढ़ के हीरा बेटा, राजिम बर तै आंधी अस।।

२

छुआ-छुत के तै ह भगैया, छोटे- बडे के तै ह चिन्हैया।।

राजीव नयन के कपाट चलो ल, सबोझन बर तै ह खोलैय्या।

अंगरेज मन ल तै दुतकारे, उंखर बर तै आंधी अस।।

३

छत्तीसगढिया भोला-भाला, तोर दुलार ल पाये हन।

जनम के बैरी बंधना ल तेहा, सबझन ला उबारे हस।।

दलित दुखित गरीबहा मन के, हिरदय ले तै दानी अस।।

४

तोर कोरा म राजिम नगरी, सब के भाग संवारे हे।

चमसुर भुंईया हे बड भागी, जेनहा तोला दुलारे हे।।

अमर होगेस तै अपन कारज ले, तै महानदी के पानी अस।।

५

भुखहा बिमरहा मनखे ल तै, कांवरा अपन खवाये हस।

उंच-नीच के डबरा-डिपरा ल, तै ह सपाट बनाये हस।।

देवता बन गेस सब बर तै ह, सब ले बडका गियानी अस।।

<u>छत्तीसगढ़ दर्शन</u>

लेखक - श्रवण कुमार साहू प्रखर

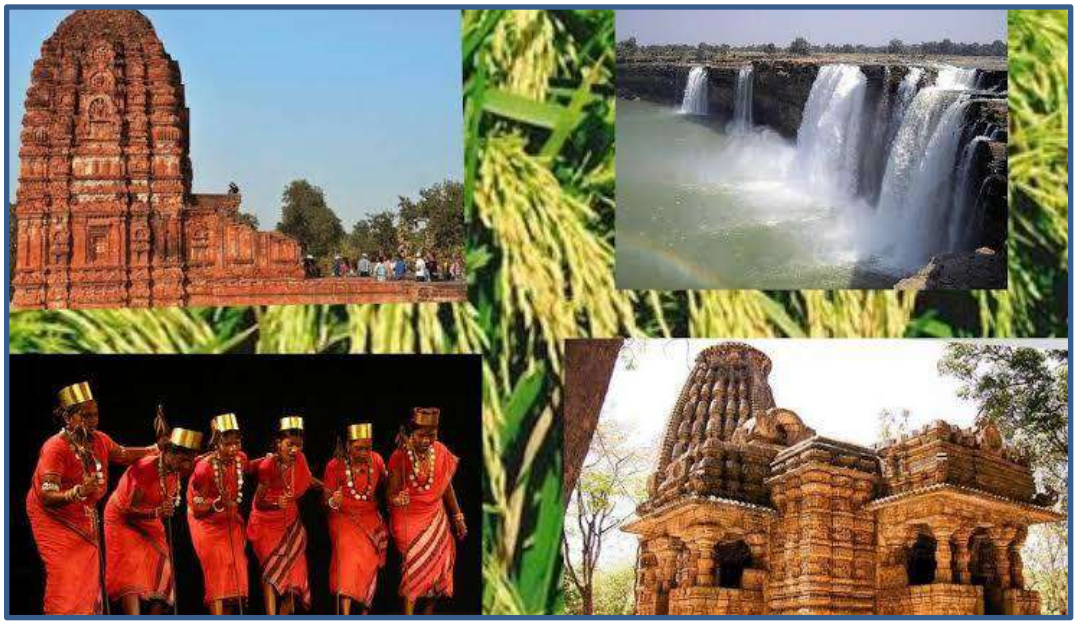

छत्तीसगढ़ के धुर्रा चंदन

चल न माथ लगाबोन

अरपा, पैरी, महानदी कस

तिरंगा लहराबोन

छत्तीसगढ़ म हावय संगी

देख तो छत्तीस किला

रैपुर जेकर रजधानी ये

सत्ताईस जेकर जिला

न्यायधानी बिलासपुर के

शोर चल न गाबोन

देवभोग म हीरा चमके

कोरबा म बिजली चमके

बैलाडिला के अनगढ़ लोहा

आके भिलाई म दमके

अन्नपूर्णा के भरे भंडारे

येकर गुण ल गाबोन

छत्तीसगढ़ के भोरमदेव

कवर्धा ह कहाये

सिरपुर अउ सिरकट्टी ह

पुरा नगरी कहाये

राजिम राज प्रयाग त्रिवेणी

चल न डुबकी लगाबोन

डोंगरगढ़ बमलाई ल सुमिरों

रतनपुर महामाई

मदकूव्दीप, मल्हार ल सुमिरों

सुमिरों शबरी दाई

दंतेवाड़ा के बस्तरहिन के

चल न माथ नवाबोन

उन्हारी जिंहा भरे पूरे हे

माटी कन्हार मटासी

दुबराज अउ गुरमटिया के

घात सुहाथे बासी

धान कटोरा छत्तीसगढ़ के

चल न जस ल गाबोन

चैतू समारू मीत मितानी

सब झन मोर संगवारी

बनभैसा अउ पहाड़ी मैना

हमरो हरे चिन्हारी

छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया

करमा, ददरिया गाबोन

आत्मानंद ह ज्ञान के कोठी

पवन दीवान ह आँधी

गुंडाधूर कस वीर बलिदानी

सुन्दर लाल जस गाँधी

वीर नारायण सोनाखान के

चल न करजा चुकाबोन

हिंदी हमर माथा के बिंदी

गुरतुर छत्तीसगढ़ी बोली

बड़ सुग्घर मोला लागे संगी

जईसन दाई के ओली

हल्बी,गोड़ी, संग म लरिया

गोठ ल हम गोठियाबोन

नाचा-गम्मत, लोरिक-चंदा

पंथी अउ पंडवानी

भरथरी अउ बांस गीत ह

घोरे कान म अमरित वाणी

खेती किसानी के गोठ बात ल

चल न गुड़ी म गोठियाबोन

तीजा पोरा, अउ हरेली

जुरमिल के हम मनाबोन

ठेठरी खुरमी, चीला अंगाकर

भरपेटहा हम खाबोन

घासीबबा अउ कबीरदास के

रद्दा हम अपनाबोन

छोटे-बच्चे

लेखिका - सुनीला फ्रेंकलिन

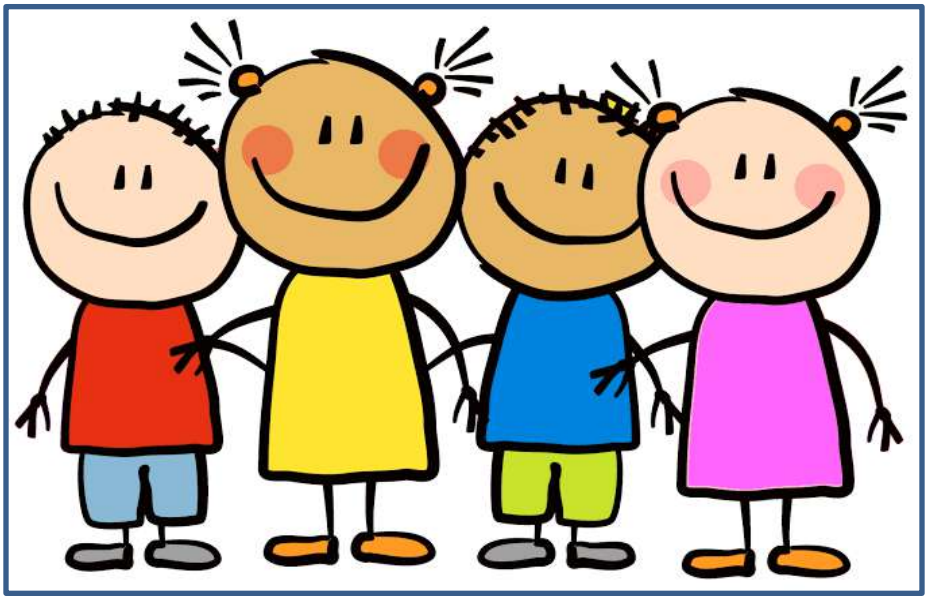

छोटे -बच्चे, बड़े ही सच्चे

शकल के अच्छे, अकल के कच्चे।

कभी रोते, कभी गाते,

कभी हंसते, कभी खाते।

मम्मी-मम्मी,पापा-पापा,

दादी-दादी, दादा-दादा।

दीदी-भैया, दे दो रुपैय्या,

खेलेंगे हम, छंद-पकैय्या।

बच्चे ऐसे रटते जाते,

शोर करते, उधम मचाते।

हमको सब कुछ आता है,

पढ़ना हमको भाता है।

जय हो छत्तीसगढ़ के धाम

लेखक - भानुप्रताप कुंजाम अंशु

जय हो छत्तीसगढ़ के धाम
जपय सबो जय हो सतनाम
मानव धरम के मरम बताइस
अहिंसा परम धरम बताइस
मंहगू-अमरौतिन तोर दाई ददा
जनम बलौदा बाजार गिरौदपुरी जगा
तपसी करे छाता पहाड़ औंरा धौंरा धाम
ग्यान दिए बाबा जपव सतनाम
परान तियागे भंडारपुरी धाम
जय हो गुरु घासी जय हो सतनाम
जम्मो मनखे तर गे सुनके अमरीत बानी
अंशु के भाग हे गुरु सुनावत हे तोर काहनी

जल की प्रकृति

लेखक एवं चित्र - पेशवर यादव भाठीगढ़

आकाश में वाष्प बनकर

संवहन कर रहा हूँ

संघनन की क्रिया से

बा दल बना रहा हूँ

बादल से उतर कर

धरती में हरियाली जगा रहा हूँ

सजीव प्राणी के लिए

जीवन का आधार ला रहा हूँ

सजीव घटकों के लिए

जल ही जीवन कहला रहा हूँ

हाइड्रोजन ऑक्सीज़न से मिलकर

H_2O बना रहा हूँ

खेत खलिहानो का

सूखा मिटा रहा हूँ

समुद्र सागरों झीलों में

जल मग्न कर रहा हूँ

पहाड़ों पर्वतों को चीरकर

कल -कल की ध्वनि से

प्राकृतिक सौंदर्यरुपी

झरना -झील बना रहा हूँ

ओस की बूंदों से

धरती पर चमक रहा हूँ

ध्रुवी प्रदेशो हिमालयों में

बर्फ का चादर ओढ़ा रहा हूँ

मैग्नीशियम-कैल्सियम के लवणों से

कठोर बन रहा हूँ

पदार्थ मुझसे घुले तो

सार्वत्रिक विलायक कहला रहा हूँ

जाड़ के महिना

लेखक - भानुप्रताप कुंजाम अंशु

फिकर मं पड़ गे डोकरी दाई
जाड़ के महिना बढ़ करलाई

हमन गरीबहा साल खतरी
पइसा वाला कंबल रजाई

किट किट किट किट दाँत बाजे
काँपे लागे ममादाई

सियान के दुख देख के
गोरसी बनाइस मोर बाई

गोरसी के आँच पाइस
लाख आशीष दिस डोकरी दाई

जूते जी

लेखक - बलदाऊ राम साहू

जूते जी करते हैं चर-मर।

जैसे मेंढक करते टर-टर।

नहीं किसी से हैं वे डरते

चट्टानों से भिड़ते डटकर।

पैरों की रखवाली करते

कंकड़,पत्थर से भी लड़कर।

पर पानी से बचकर रहते

पैरों से वे निकल-निकल कर।

<u>जेठौनी तिहार</u>

लेखिका - शीला गुरूगोस्वामी

कांदा कोचई भाटा बोइर के

सजे हावय हाट बजार

देवउठनी एकादशी के आगे तिहार

तुलसी चौंरा म सजाबो कुसियार

तुलसी बिहाव होही तेकर ले

सबो देवता के करबो मनुहार

बाढ़े बेटा बर बेटी लाबो

बेटी ल भेजबो ससुरार

घर म सुख शांति बने रहय

हांसत खेलय रहय परिवार

इही मंगलकाना करत संगी

मनाबो जेठौनी एकादशी के तिहार

धरती पर लगा पेड़

लेखक - नेमीचंद साहू

धरती पर लगा पेड़

हरियाली हो जाये

हर घर कर उजाला

दीवाली हो जाये

हाथ बढ़ा दया का

खुशहाली हो जाये

लगा प्रेम से गला जरा

ग़म से खाली हो जाये

गा देशभक्ति का गाना

मतवाली हो जाये

डाल अपनेपन का रंग

चारों ओर वाली हो जाये

हाथ लगा दोनों साथ

तो ताली हो जाये

<u>नवाचार - अंकों का पहाड़ा</u>

लेखिका एवं चित्र - आशा उज्जैनी

आवश्यक सामग्री - पुराने कार्ड बोर्ड, रंगीन पेपर, कलर पेन, फेवीकॉल, कैंची आदि

विधि - मैंने 2 से 10 तक संख्या की आकृति कार्ड बोर्ड में बनाकर काट लिए, उसमें कलर पेपर चिपका कर कलर पेन से संख्या में उसी संख्या का पहाड़ा लिखते हैं,

लाभ - नवाचारी गतिविधियां से बच्चे मजे से पहाड़ा याद करते हैं और सीखते हैं.

नवाचार - कबाड़ से जुगाड़ कर मानव अंगों का मॉडल

लेखिका एवं चित्र - अनामिका पांडे

कक्षा सातवीं मे मनुष्य के कुछ प्रमुख अंगतंत्रों की संक्षिप्त रचना एवं कार्य के बारे मे बच्चों को समझाने एक सहायक शिक्षण सामग्री तैयार किया है. रक्त परिसंचरण तंत्र मे फेफड़ों का महत्वपूर्ण कार्य कि अशुध्द रक्त को आक्सीजन युक्त करके पुनः शुध्द करता है. अतः फुफ्फुस धमनी एवं फुफ्फुस शिरा उल्टा कार्य करते हैं यह इस माडल से समझाना आसान होता है.

पाचन तंत्र, उत्सर्जन तंत्र एवं श्वसन तंत्र बनाने के लिये शैम्पू बाटल बिसलेरी बाटल एवं पाइप का उपयोग किया आंख की रचना कक्षा आठवीं के बच्चों को समझाने गोल बाटल मे पावर कांच लगाया और दूसरे तरफ वस्तु का प्रतिबिम्ब दिखाया. सभी तंत्रों को खड्डे से मानव आकार बनाकर सुतली से बांध दिया.

इस प्रकार एक ही सहायक शिक्षण सामग्री से सभी अंग तंत्र को समझाया जा सकता है.

नवाचार - कबाड़ से जुगाड़

लेखिका एवं चित्र - मनीषा सिंह

पुराने समाचार पत्रों से उपयोगी टोकरी, सजावट का समान, पुराने मटके को सजाना, पुरानी पॉलीथीन से अंगूर बना कर गृह सज्जा का सामान बनाना.

उद्देश्य - बच्चों में कलात्मक, सृजनात्मक कौशलों का विकास. पुरानी वस्तुओं को फिर से उपयोगी बनाने की कला सीखना.

विधि - शासकीय पूर्व. माध्य. शाला अमसेना में हर सप्ताह के शनिवार को बच्चों को हस्तकला में कबाड़ से जुगाड़ के तहत पुराने समाचार पत्रों से घर में उपयोग की जाने वाली टोकरियों का निर्माण एवं सजाने की वस्तुएं बनाना, पुराने मटको को सजाकर फिर से उपयोगी बनाना, पुरानी पॉलीथीन से अंगूर बना के घर या शाला को सजाना मेरे व्दारा सिखाया गया.

लाभ - बच्चे व्यावसायिक शिक्षा से वर्तमान और भविष्य में इसका लाभ ले सकते हैँ. आर्थिक समस्याओं और बेरोजगारी में लाभ. बच्चों में सामुदायिक कार्य करने की भावना जागृत करना.

नवाचार - धान के पौधों से झालर

लेखक एवं चित्र - कान्हा साहू

कक्षा 5 के बच्चों व्दारा अपने पालकों की मदद से रविवार अवकाश का उपयोग करते हुए धान के पौधों से सुंदर झालर बनाकर आज स्कूल में लाया गया. इनका उपयोग अभी शाला सजावट में किया जायेगा एवं गर्मियों में इन झालरों को शाला प्रांगण में स्थित पेड़ पौधों पर चिड़ियों के खाने हेतु रखा जाएगा. इस प्रकार के कार्यों से बच्चों में नवीन विधा के विकास के साथ बड़ों के मार्गदर्शन में कार्य करने अनुभव भी मिलता है. हस्तकला निर्माण का ज्ञान होता है. पालक भी अपने बच्चों के कार्यों में सहयोग करते हैं.

नवाचार - सपेरा बस्ती में विशेष कक्षाएं

लेखिका - नंदा देशमुख

आमतौर पर घुमंतू समुदाय से हर व्यक्ति वाकिफ है. अमूमन देश के कोने-कोने में नुक्कड़ पर नाच गाने का प्रदर्शन करने और तमाशा दिखाने के नाम से इन्हें जाना जाता है. समुदाय से जुड़े सदस्यों का जीवन रंग-बिरंगा होता है. यही कारण है कि पेट की आग बुझाने के लिये यह परंपरागत व्यवसाय को नहीं छोड़ते. शिक्षा को महत्व नहीं देते. इनकी परवरिश ऐसी होती है कि ये स्कूली शिक्षा से विमुख हो जाते हैं.

दुर्ग ज़िला मुख्यालय से महज 9 किलोमीटर दूर ग्राम पंचायत सिरसा खुर्द में घुमंतू समुदाय की बस्ती है. यहां रहने वालों को सपेरा के नाम से जाना जाता है. ये स्वयं को छत्तीसगढ़ी पहाड़ी गोंड जाति का होना बताते हैं. इसी बस्ती के बच्चों को मैंने शासन की योजना "सब पढ़ें सब बढ़ें" के तहत 2018-19 से शिक्षा देना शुरू किया है जो अनवरत जारी है. इस वर्ष भी शासकीय प्राथमिक स्कूल सिरसा खुर्द में विशेष कक्षा लगाई जा रही है.

दरअसल शुरुआत में कुछ बच्चों को स्कूल में दाखिला अवश्य कराया गया था, लेकिन बाद में बच्चों की सुध नही ली गई. अशिक्षा, व स्वच्छंद विचारधारा के कारण अन्य सामान्य बच्चे एवं सपेरा बस्ती के बच्चे आपस में घुल-मिल नहीं पाए. यही कारण था कि बच्चे वैचारिक रूप से बहिष्कृत हुए और बच्चों ने स्कूल आना बंद कर दिया. तब मैंने बच्चों को दोबारा स्कूल लाने का संकल्प लिया. दरअसल यह मेरे लिए चुनौती से कम नहीं था, क्योंकि ये बच्चे स्वच्छंद विचारधारा वाले समुदाय से नाता रखते हैं. 5 घंटा एक जगह बैठने को वे सजा समझते थे. तब मैंने इस बस्ती के सभी बच्चों को एक ही कक्षा मैं उम्र के आधार पर शिक्षा देना शुरू किया. नवाचार करने के लिए और बच्चों को स्कूल लाने के लिए कई तरह के प्रयोग किये. इसके लिए मुझे कई बार एन.सी.ई.आर.टी. के श्री डॉ. एम. सुधीश सर से मार्गदर्शन मिला. विकास खंड शिक्षा अधिकारी दुर्ग व बी.आर.सी.सी. व सी.एस.सी. से विशेष सहयोग मिला.

शुरुआत में बच्चों की संख्या काफी कम थी. दर्ज संख्या को बढ़ाने मैं बस्ती पहुंची और मलिन बस्ती में रहने वाले अभिभावकों को समझाया. बस्ती में नुक्कड़ सभा

करने के अलावा कक्षा भी लगाई व नवाचार के प्रयोग किये. तब कहीं जाकर बच्चे पूरे वर्ष स्कूल आए. स्कूल में मैने सपेरा बस्ती के उन अभिभावकों को बुलाया जिनके बच्चे स्कूल आते हैं. उन्हें तब खुशी हुई जब उन्हें उनके बच्चे किताब पढ़ते मिले. मैं दिखाना चाहती थी कि जो अभिभावक अपने बच्चों से भिक्षा मंगवाते थे आज वे पढ़ना सीख गए. मैंने बच्चों के साथ मिलकर मलिन सपेरा बस्ती में जयंती विशेष पर कई कार्यक्रम किए.

मेरा ऐसा सोचना है कि इस बस्ती में 100 से अधिक बच्चों को एक निर्धारित उम्र से स्कूल जाने के लिये प्रेरित किया जाना चाहिए. इसके लिए आवश्यकता है कि सपेरा बस्ती में आंगनबाड़ी केंद्र की स्थापना हो. मैने छोटा सा प्रयास करते हुए महिला एवं बाल विकास विभाग कार्यक्रम अधिकारी दुर्ग को आंगनबाड़ी केंद्र संचालित करने आवेदन भी सौंपा है लेकिन अब तक विभाग ने आवेदन पर गंभीरतापूर्वक विचार ही नहीं किया. खास बात यह है कि 2019-20 शैक्षणिक सत्र में 35 बच्चे विशेष कक्षा में अध्ययनरत हैं.

नो पेन्डिग

लेखक - विकास कुमार हरिहारनों

जिंदगी बड़ी सरल है
हर मुश्किलों का हल है
याद रख,कर ले तू ऐसा काम
नो पेन्डिग इन योर लाईफ
सुबह का सुबह ही,दिन का उस दिन ही
हर क्षण का उस क्षण ही
करता जा बस काम
नो पेन्डिग इन योर लाईफ

काँटा चुभे तुम्हें तो
तत्क्षण उसे निकालो
हर मुश्किलों का हल है
नो पेन्डिग इन योर लाईफ

जीवन अगर सरल है
खुशियाँ मिलेंगी अनहद
बस याद रखके चलना
नो पेन्डिग इन योर लाईफ

प्यारे बच्चों! आओ मेरे पास

लेखक - अभिषेक शुक्ला

प्यारे बच्चों,प्यारे बच्चों आओ मेरे पास,
दूर वहाँ क्यों बैठो हो तुम हो क्यो इतने उदास ?
आओ मिलकर पाठ पढ़ो कुछ सीखें नई बात,
मिल जुलकर सब साथ रहो और मन में हो विश्वास.

प्यारे बच्चों,प्यारे बच्चों आओ मेरे पास,
दूर वहाँ क्यों बैठो हो तुम हो क्यों इतने उदास?
सुबह उठो जल्दी से तुम और बोलो सब को 'शुभ प्रभात',
बस्ता लेकर स्कूल चलो तुम सब ले हाथों में हाथ।

प्यारे बच्चों,प्यारे बच्चों आओ मेरे पास,
दूर वहाँ क्यों बैठो हो तुम हो क्यों इतने उदास?

नित्य कर ईश्वर की प्रार्थना कर्तव्य मार्ग पर डटे रहो,
कोई भी कठिनाई आये पर तुम पीछे न कभी हटो

प्यारे बच्चों,प्यारे बच्चों आओ मेरे पास,
दूर वहाँ क्यों बैठो हो तुम हो क्यों इतने उदास?
पढ़ लिखकर रोज ही सीखो अच्छी-अच्छी बात,
जीवन में खूब आगे बढ़ो तुम सच्चाई के साथ।

प्यारे बच्चों, प्यारे बच्चों आओ मेरे पास,
दूर वहाँ क्यों बैठो हो तुम हो क्यों इतने उदास?

<u>प्रेम सदा बरसाय (कुंडलियाँ)</u>

लेखक - डिजेन्द्र कुर्रे कोहिनूर

कहते ज्ञानी संत हैं, जो मन मे अपनाय।

एकसूत्र जो बाँधकर, प्रेम सदा बरसाय।।

प्रेम सदा बरसाय, सभी को अपना माने।

कैसा किसका ध्यान, उसे भी जग पहचाने।।

कह डिजेन्द्र करजोरि, प्रेम से हैं जो रहते।

मानवता का राज, सदा ही ज्ञानी कहते।।

बचपन

लेखिका - स्नेहलता स्नेह

जिंदगी के ब़ाग का सबसे निराला फूल हूँ

लोग कहते धूल में लिपटा हुआ सा फूल हूँ

मुस्कुराता हूँ सदा अपना सभी को मानता

मैं हूँ बच्चा प्रीत गुलशन का अनोखा फूल हूँ

देख कर अठखेलियाँ मुस्का रहे पापा मेरे

मात की आँखों का तारा हूँ दुआ का फूल हूँ

तुतली तुतली मेरी भाषा मस्तमौला फिर रहा

छल कपट से दूर हूँ रब का उगाया फूल हूँ

स्नेह रखता हूँ मैं सबसे सबसे पाता स्नेह हूँ

पाप का कीचड़ जहां बचपन कंवल सा फूल हूँ

मेरा वो प्यारा बचपन मस्ती

लेखक - गिरजा शंकर अग्रवाल

लौटा दो कोई मस्ती

मेरा वो प्यारा बचपन

वो मौज मस्ती

कोलाहल से भरा आँगन

वो अनोखे खेल

कँही चोर सिपाही तो कँही रेल

जो अपने थे

आज खो गए हैं

लौटा दो फिर कोई

वही पेड़ों की लताएँ

दादी माँ की कहानियाँ

और पंचतंत्र की कथाएँ

आज नए जमाने की चकाचौंध में

छिप गयी हैं बचपन की वो मस्ती

मोबाइल व इंटरनेट जो चल रही हैं

घर-घर बस्ती-बस्ती

लौटा दो कोई

फिर वही हँसता बचपन

दब गए हैं जो आज

बस्ते के बोझ तले

मेरा वो प्यारा बचपन

लौटा दो कोई फिर वही शैतानियाँ

जो मेरे अपने थे

खो गए हैं कहीं

मेरा वो प्यारा बचपन

मेरी दादी

लेखक - बलदाऊ राम साहू

मेरी दादी बड़ी सयानी
रोज़ सुनाती नई कहानी

कहानी में गड़बड़ झाला
भर देती हैं नया मसाला

गुट्टू, नट्टू, बिट्टू आओ
सुनो कहानी मन बहलाओ

आओ बैठें दादी के पास
कल्पना में उड़े आकाश

मेला चले हम

लेखक - बलदाऊ राम साहू

आओ मेला चलें हम भाई।

झूला झूलें, खाएँ मिठाई।

मम्मी-पापा का कहना मानें,

कभी करें ना कोई ढिठाई।

धमा- चौकड़ी हम कर आएँ,

आने पर किस्सा बतलाएँ।

चाबी वाला बंदर लाएँ,

उसको पाजामा पहनाएँ।

देखो हाथी कितना भारी,

उस पर बच्चे करें सवारी।

देखो ऊँट जी मचल रहे हैं,

घोड़े ने कब बाजी हारी।

कितने सुन्दर हैं खिलौने,

कुत्ते के पिल्ले, मृग के छौने।

नाच रही परियों की रानी,

करतब दिखा रहे हैं बौने।

चूँ-चूँ करती बैठी थी चिड़िया,

आँखें मटका रही थी गुड़िया।

कोई जादू दिखा रहा था,

मन बच्चों का बहला रहा था।

मोर छत्तीसगढ़ के माटी

लेखक - संतोष कुमार साहू प्रकृति

१

मोर छत्तीसगढ़ के भुंईयां के, सुघ्घार हाबे माटी।

मोर छत्तीसगढ़ के भुईयां के, अमरित हाबे माटी।।

लवकुश ह जिंहा जनम धरिस हे, तुरतुरिया हाबे घाटी ।।

२

कोरिया सुरज बलरामपुर म, रामगढ के हे माटी।

सोनाखान हे सोनहा बिहिनिया, लाली पींवरी माटी।

पैरीखंड म मैनपुर हे, दमकत

चमकत पाटी।।

३

मुंगेली कवर्धा म भोरमदेव, चमकत हे मसमाया।

कोरबा रायगढ बिलासपुर म, कोईला के हाबे छाया।।

सरगुजा जशपुर बादलखोल हे, कुनकुरी हाबे घाटी।।

४

शबुरीनारायण जांजगीरचापा, महानदी के माटी।

बलौदाबाजार बेमतरा रयपुर हे, आरंग हाबे छाती।।

दुरुग नांदगांव डोंगरगढ हे, भिलाई मितानी के माटी।।

५

महासमुंद खल्लारी सिरपुर, लक्ष्मण मंदिर झांकी।

बालोद धमतरी झलमला बिलाई, चारों कोती हे आंखी।।

कांकेरघाटी कोंडागांव हे, नारायणपुर पैर पाटी।।

६

परयाग राज हे राजिम नगरी, गरियाबंद उदंतीय घाटी।

तीनेच नदिया जिंहा मिलत हे, तीनेच जिला के माटी।

पैरी सोढु महानदी हे, संग संगवारी के साथी।।

७

दंतेवाडा दंतेश्वरी बैठे, डंकनी-संखनी के माटी।

सुकमा बस्तर ममहावत हे, चित्रकोट के हे घाटी।।

कांगेर म हे जीव जनावर, सुघ्घर हाबे माटी।।

८

बैलाडीला बोहावत हाबे, लोहा ल भर के छाती।

बीजापुर लहलहावत हाबै, सरयी के सुघ्घर पाती।।

हरियर लुगरा पहिने हे बस्तर, जिंहा इंद्रावती के घाटी।।

९

इही माटी म जनम धरेहन, छत्तीसगढ़ के वासी।

माटी म रहीबोन माटी म मिलबोन, काया हाबे माटी ।।

जिनगी भर हम खेलत रहिथन, बढिया भौंरा बांटी।।

मोला सरल जीवन दे दे

लेखक - श्रवण कुमार साहू - प्रखर

जेन धन माँगे, वोला धन दे- दे

जेन तन माँगे, वोला तन दे - दे

मैं तो माँगव वो दाई

मोला सरल जीवन दे दे

कर सकंव मेहा, सबके हियाव

सबके खातिर, एके हो भाव

मोला बना दे, तेहा वो पानी

सत्संगी म रंगे, जिनगानी

तै मोला, समरपन दे दे

मैं तो माँगव वो दाई

मोला सरल जीवन दे दे

नव रस म डूबे, गीत बना दे

सबके हिरदे के, मीत बना दे

मैं बन जावंव सब के आशा

जैसन तन म, चलथे वो श्वांसा

जेन यौवन माँगे,यौवन दे - दे

मैं तो माँगव, वो दाई

मोला सरल जीवन दे दे

मोह माया से, मुक्ति दिला दे

मईया तै अपन, भक्ति दिला दे

मन म गियान के, ज्योति जला दे

सत्कर्मों के मोती, दिला दे

जेन चंदन मांगे, चंदन दे - दे

मैं तो माँगव वो दाई

मोला सरल जीवन दे दे

कतको ह माँगे, सुग्घर काया

कतको ह माँगे, भर - भर माया

तोर चरण ह, मोर मन भाया

मैं माँगव तोर, अछरा के छाया

जेन कंचन माँगे, कंचन दे - दे

मैं तो माँगव वो दाई

मोला सरल जीवन दे दे

लइका मन

लेखक - टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला

अरे लइका मन धूम मचाय बियारा मा

खेलय-कूदय अउ चिल्लाय बियारा मा

धान के खरही के ओधा ले मस्त

रानी मनू ओमू लुकाय बियारा मा

बड़ मोट्ठा डराय धान के पेर मा

अबड़ उलान-बाँटी खाय बियारा मा

खेलय-कूदय हाँसय-गावय जी

फेर खसर-खसर खजवाय बियारा मा

हाँसय, कूलकय अउ रोवय घलोक

अरे माँड़ी-कोहनी छोलाय बियारा मा

लाला जी

लेखक - बलदाऊ राम साहू

लाला जी ओ लाला जी

कहाँ तुम्हारी खाला जी

खाला ने काम बताया

तुमने क्यों उसे टाला जी।

लाला जी ओ लाला जी

लाना गरम मसाला जी

मसाला में धनिया मिर्च

क्या-क्या तुमने डाला जी।

लाला जी ओ लाला जी

काहे लफड़ा पाला जी

जाओ मथुरा वृंदावन

जपना तुम भी माला जी।

सपना देख

लेखक - टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला

आगे बढ़े के सपना देख
सीढ़ी चढ़े के सपना देख

खड़े हो के धरती पर
गगन उड़े के सपना देख

खेलते-कूदते उठते-बैठते
लिखे-पढ़े के सपना देख

मात-पिता और गुरू की
सेवा करे के सपना देख

हँसते-गाते नित्य अपनी
दुनिया गढ़े के सपना देख

साग भाजी

लेखिका - प्रिया देवांगन प्रियू

ताजा ताजा सब्जी आवत, रोज सबझन खाओ जी
भाजी पाला बने मीठाथे, ताजा ताजा बनाओ जी

हरा हरा धनिया हा दिखत, महर महर ममहाथे जी
पालक मेथी रोज खावव, देंहे मा तंदरुस्ती आथे जी

भिंडी कुम्हडा रोज आवत, अम्मटहा मा बनावत हे
बबा ला धरे हे जुड़ खाँसी, डॉक्टर ल बलावत हे

भाटा मुरई के साग हा, सबला बने मिठावत हे

भौजी राँधत रोज के, लइका चाट के खावत हे

सृजन करें

(लावणी छंद)

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

नई सृजन की बेला आई, आओ कुछ निर्माण करें ।
आगे बढ़ते जायें हम सब, भारत माँ का नाम करें ।।

कदम रुकें मत बाधाओं में, संकट से हम नहीं डरें ।
लक्ष्य साध कर बढ़ते जाओ, मन में अपना धीर धरे ।।

करें खोज विज्ञान जगत में, छू लें चाँद सितारों को ।
सृजन करें ऐसे हम साथी, माने सब उपकारों को ।।

मिटे गरीबी गाँवों के सब, ऐसे कोई सृजन करें ।
हाथों में हो काम सभी के, भूखों से अब नहीं मरे ।।

पढ़ लिखकर सब बढ़ते जायें, जग में ऊँचा नाम करें ।
भेदभाव को छोड़ साथियों, नहीं किसी से कभी डरें ।।

हम स्कूल चलेंगे

लेखक - अभिषेक शुक्ला

हम स्कूल चलेंगे जहाँ हम खूब पढ़ेंगे
सीखेंगे अच्छी बाते और पायेंगे ज्ञान
पढ़ लिखकर हम बनेंगे अच्छे और महान
हाँ, हम स्कूल चलेंगे जहाँ हम खूब पढ़ेंगे
प्रार्थना सभा में मिल गाएंगे राष्ट्रीय गान
सब को बतायेंगे कि है मेरा भारत देश महान
हाँ,हम स्कूल चलेंगे जहाँ हम खूब पढ़ेंगे
पढ़ेंगे हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत और विज्ञान
पायेंगे गुरुजन से गणित का सारा ज्ञान
हाँ, हम स्कूल चलेंगे जहाँ हम खूब पढ़ेंगे
हम प्रेम और भाईचारा से रहना सीखेंगे
भूल से भी आपस में न हम कभी लड़ेंगे
हाँ,हम स्कूल चलेंगे जहाँ हम खूब पढ़ेंगे
हाँ,हम स्कूल चलेंगे जहाँ हम खूब पढ़ेंगे

<u>नन्दा मैडम की कक्षा</u>

(भाग - 4)

लेखक – सुधीर श्रीवास्तव

दोपहर के खाने की छुट्टी की घंटी बजी. बच्चे खाना खाने बाहर निकल गए. नन्दा, हरप्रीत और सुधा ने भी जल्दी ही अपना टिफ़िन खत्म किया और एक साथ बैठ गईं. कल उनकी बातचीत अधूरी रह गयी थी. हरप्रीत और सुधा, दोनों ही चाहती थीं कि वे नन्दा के अनुभवों को सुनें. दोनों के मन में ये जानने की अकुलाहट थी कि आखिर गिनती इतनी महत्वपूर्ण क्यों है.

बातचीत कि शुरुआत हरप्रीत ने की. उसने कहा “नन्दा मेरी कुछ जिज्ञासाएँ तो कल शांत हुईं, पर मेरे मन में अभी भी कई सवाल बाकी हैं. इन पर मैं तुमसे आगे फिर बात करूंगी. अभी तो हम चाहते हैं कि गिनती सीखने सिखाने से संबन्धित तुम्हारे अनुभवों को पहले सुनें.”

“ठीक है प्रीत, हम गिनती से ही बात शुरू करेंगे. कल सुधा का सवाल था कि गिनती पर इतना समय क्यों देना चाहिए.” इतना कह कर नन्दा रुक गई. वह कुछ सोचने लगी. फिर धीरे से उसने कहना शुरू किया -

“मुझे ऐसा लगता है, इस सवाल का जवाब ढूँढने से पहले हमें यह सोचना चाहिए कि ‘गणित को पढ़ना ही क्यों चाहिए.’ बहुत लोगों की यह धारणा है कि यह कठिन और उबाऊ है, तो इसे पाठ्यक्रम मे रखा ही क्यों जाए? क्या हम इस बात पर थोड़ी देर सोचें?” नन्दा ने सवाल किया.

इस पर सोचते हुए सुधा ने कहना शुरू किया, “गणित तो पढ़ना ही होगा, अगर इसे नहीं समझा तो जीवन के बहुत सारे काम अटक जाएंगे. गणित का उपयोग तो हर जगह है, हर काम में है. इसके बिना तो दुनियादारी की कल्पना ही कठिन है. हर छोटी-बड़ी चीज़ में गणित शामिल है.”

सुधा की इस बात से हरप्रीत के चेहरे पर उलझन के भाव आ गए. उसने कहा, “ऐसा तुम कैसे कह सकती हो सुधा? जो लोग कभी स्कूल नहीं गए, जिन्होने गणित कभी नहीं पढ़ा, क्या वो जी नहीं रहे, क्या उनकी दुनिया ठहर गयी है?”

“नहीं प्रीत, ऐसा नहीं है. पहले तो यह समझ लो कि गणित केवल किताब या स्कूल की चीज़ नहीं है. हमारे हर छोटे-बड़े काम में गणित प्रायः शामिल रहता ही है. तुम जिन लोगों की बात

कर रही हो वो भी जाने अनजाने गणित का उपयोग करते ही हैं." सुधा ने हरप्रीत को समझाते हुए कहा.

हरप्रीत अभी भी आश्वस्त नहीं हो पाई थी. उसने अनुरोध के स्वर मे कहा, "सुधा, मुझे तुम्हारी बात ठीक तरह से समझ में नहीं आ रही है. जरा खुल कर अपनी बात समझाओ न."

नन्दा इन दोनों की बातचीत को चुपचाप सुन रही थी. उसे यह लग रहा था कि सुधा गणित के जिन अनछुए पहलुओं को सामने लाना चाह रही है उसे प्रीत को भी समझना जरूरी है. ये सारी बातचीत गिनती को समझने का आधार तैयार करेंगी.

सुधा की बात खत्म नहीं हुई थी, वह कह रही थी, "प्रीत, मेरा बचपन गाँव में ही बीता है. मेरी माँ कभी स्कूल नहीं जा पायी थीं. वो खाना बहुत अच्छा बनाती थीं. उनके बनाए खाने में शायद ही कभी ऐसा हुआ कि आज मिर्च ज्यादा हो गयी या नमक कम हो गया हो, एकदम सही अनुपात होता था. हमारे यहां मेहमान बहुत आते थे. माँ का अनुमान लगभग सही ही होता था, कितना चावल पकना है, कितनी रोटियाँ बननी हैं. मुझे याद नहीं है कि कभी इतना खाना बचा कि फेकना पड़ जाये. उनका ये अनुमान लगाना भी गणित का ही हिस्सा है."

"इन सब के अलावा घर में, खेतों में काम करने वालों को कितना पैसा देना है, कितना अनाज साल भर के लिए रखना है, कितना बेचना है. किस खेत में कितना बीज बोना है जैसे सारे हिसाब वो मौखिक रूप से ही करती थीं. प्रीत, क्या तुम्हें नहीं लगता की इन सब कामों में गणित का उपयोग हुआ होगा?"

हरप्रीत ध्यान से यह सब सुन रही थी और कल्पना में देख रही थी कि बाज़ार में बैठी सब्जी वाली कितनी जल्दी किसी की खरीदी हुई सब्जियों का हिसाब जोड़ कर बता देती है. और भी कई ऐसे उदाहरण उसकी आँखों के सामने तैर रहे थे जिनमे उसने अनपढ़ कारीगरों को कई तरह के काम सफाई और खूबसूरती से करते देखा था. वो लगभग खो गयी थी अपने विचार प्रवाह में.

सुधा ने हरप्रीत से कहा, “तुम सुन भी रही हो कि नहीं?”

हरप्रीत चौंक गईं, “अरे हाँ ! सुन रही हूँ, सोच भी रही हूँ। तुम बोलो न.”

सुधा ने फिर कहा, “लकड़ी की जिस कुर्सी पर तुम बैठी हो उसे लगभग 10 – 15 साल तो हो ही गए होंगे बने हुए। देखो, अभी भी ये कितनी मजबूत है. तुम्हें क्या लगता है, इसे किसी इंजीनीयर ने बनाया होगा? जरा गौर से इसके चारों पायों और हत्थों को देखो, सभी पाये बिल्कुल एक जैसे हैं, दोनों हत्थों में कितनी समानता है, और इसकी पुश्त को तो देखो, कितना सटीक झुकाव दिया है. तुम्हें इसके हर हिस्से में एक समरूपता, एक समानता यानि गणित कि भाषा में एक खूबसूरत सममिति दिखाई पड़ेगी.

नन्दा और हरप्रीत दोनों ही मुग्ध भाव से सुधा कि बातें सुन रही थीं. हरप्रीत सोच रही थी उसने इसके पहले इस कुर्सी को इस नज़र से देखा क्यों नहीं.

सुधा का बोलना जारी था. उसने कहा, “प्रीत, इस बढ़ई ने कुर्सियां, टेबल बनाने कि पढ़ाई किसी कॉलेज में नहीं की होगी.”

इसके बाद थोड़ी चुप्पी बनी रही. हरप्रीत कुछ समझ गयी थी, कुछ समझने कि कोशिश कर रही थी. थोड़ा सोचने के बाद उसने कहा, “सुधा तुम्हारी बातों से दो चीज़ें समझ में आ रही हैं. एक तो यह कि हम जो कुछ करते हैं, प्रायः उन सभी में गणित किसी न किसी रूप में मौजूद होता है. दूसरी बात, जिन्होंने स्कूली गणित को नहीं सीखा वे भी गणित का उपयोग जाने अनजाने करते ही हैं. लेकिन अगर दूसरी बात पर यकीन करें तो एक सवाल मन में उठता है – स्कूल में गणित पढ़ाने की जरूरत ही क्या है?”

सुधा ने जवाब में कहा, “तुहारा सवाल जायज़ है प्रीत. ये उदाहरण मैंने इसलिए दिये कि हम जीवन में गणित की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचान सकें. अब बात है स्कूली पाठ्यक्रम में गणित को रखने की. इसके पक्ष में लंबी चर्चा की जा सकती है. अभी बस इतना समझ लो कि दुनिया में जितनी भी तरक्की हो रही है, उन सभी के महत्वपूर्ण आधारों में एक गणित भी है, किसी कारखाने में बटन बन रहे हों या चाँद पर उतरने की कोशिश हो रही हो. कोई भी काम बिना गणितीय ज्ञान के संभव नहीं होगा. स्कूल में सीखा जाने वाला गणित इन सब की बुनियाद है.”

नन्दा, जो अब तक दोनों कि बातें ध्यान से सुन रही थी, बोल पड़ी, “वाह सुधा, वाह !! क्या बात है! मज़ा आ गया तुम्हारी बातें सुन कर. तुमने जिस तरह से गणित कि अहमियत पर अपनी बातें रखी हैं उसमे और भी उदाहरण जोड़े जा सकते हैं. मैं समझती हूँ, तुमने खुद ही अपने सवाल का जवाब दे दिया है. जब तुम कह रही थी स्कूल में सीखा जाने वाला गणित दूसरी बहुत सारी चीजों को सीखने कि बुनियाद है, वहीं पर तुम ये भी स्वीकार करोगी कि बुनियाद जितनी मजबूत होगी, उस पर बनने वाली इमारत उतनी ही टिकाऊ होगी.

“हाँ नन्दा, मैं इस बात से सहमत हूँ.” सुधा ने अपनी सहमति दी.

“अब थोड़ा इस बात पर हम गौर करेंगे कि अपनी शालाओं में हम सब गणित की शुरुआत कैसे करते हैं?” नन्दा ने सोचने के लिए एक प्रश्न रखा.

सुधा और हरप्रीत दोनों कुछ पल सोचती रहीं. सुधा ने पहल की, “नन्दा, मुझे इसमें कुछ खास बात कभी दिखाई नहीं पड़ी. मैंने प्रायः बोर्ड पर गिनती को लिखा और क्रम से पढ़ दिया. बच्चों को दोहराने को कहा. यही बार बार किया. कुछ दिनों बाद बच्चों से इसे लिखने को कहा. बस कुछ इसी तरह मैंने सिखाने की कोशिश की.”

“मैं भी ऐसा ही करती हूँ नन्दा” हरप्रीत ने सुधा की बात पर ही सहमति दी.

नन्दा की आँखें बंद थीं. वह सोच रही थी कि इस तरीके से गिनती को बच्चों तक ले जाने में सीखना कितना कठिन हो सकता है उसकी अनुभूति किसी शिक्षक को कैसे कराई जाए. उसने धीरे से समझाने के लहजे में कहना शुरू किया.

“सुधा और प्रीत, इस बात को कक्षा एक के बच्चे के संदर्भ में कहना चाहूँ तो क्या इस तरह कहा जा सकता है – बोर्ड पर मैंने कुछ आड़ी टेढ़ी आकृतियाँ बना दीं और उनमें से हरेक के साथ कुछ अनजाने – अनसुने नाम चिपका दिये. जैसे पाँच, बारह, उन्यासी, बहत्तर, सैंतीस.” आदि.

“अब बच्चे की ज़िम्मेदारी है कि इन आकृतियों को अपने दिमाग में ठीक ठीक छाप ले, इनके साथ बोले गए शब्दों को इनके साथ जोड़ कर रखे. इतना ही नहीं, इन सभी शब्दों को उसी क्रम से बोले, जैसा शिक्षक ने पढ़ाया है. बात यहां भी नहीं रुकती, हम शिक्षकों की और बहुत से माँ-बाप की भी यही अपेक्षा रहती है कि बच्चा उन आकृतियों को अपनी स्लेट या कॉपी पर वैसा ही

बनाए भी. यदि इनमें कहीं कुछ भी इधर-उधर हो जाए तो बस फिर क्या है, डांट खाने या उलाहने सुनने को तैयार रहे."

नन्दा ने अपनी बात रोकते हुए पूछा, "क्या छः – सात साल के बच्चे से इतनी अपेक्षाएँ बहुत ज्यादा नहीं लगती सुधा? प्रीत तुम्हें क्या लगता है?"

आज की बातचीत में जब भी कोई सवाल उठा, एक खामोशी सी पसरती रही हर बार. तीनों के दिमाग में विचारों का व्दंद शुरू हो जाता था. तीनों शायद यहां होकर भी यहां नहीं होती थीं. अभी भी तीनों कक्षा की परिस्थितियों में बच्चों कि जगह खुद को रख कर कठिनाई को महसूस करने की जद्दोजहद में पड़ीं थीं.

हरप्रीत ने कहा, "मैं किसी परिणाम तक नहीं पहुंच पा रही हूँ."

"मैं भी कुछ ठीक ठीक नहीं कह पाऊँगी लेकिन लग रहा है यह काम बच्चे के लिए मुश्किल हो सकता है." सुधा ने धीरे से अपनी बात रखी.

नन्दा ने कहा, "बहुत से लोग इस सवाल पर यह भी कहते हैं कि इसमें मुश्किल क्या है, हमने भी तो ऐसे ही सीखा है, दुनियाभर के बच्चे ऐसे ही सीखते हैं. इस बात को समझने से ज्यादा जरूरी है महसूस कर पाना. सुधा, इसे एक उदाहरण से समझते हैं. जब तुम पहली बार अपनी कक्षा में बच्चों से मिली तो उन सब का नाम याद करने में तुम्हें कितने दिन लगे थे?

"यही कोई बीस – पच्चीस दिन." सुधा ने कहा.

“क्या नाम के साथ बच्चों को पहचानने भी लगी थी?” नन्दा ने पूछा.

“अ.....शायद नहीं. अभी भी किसी किसी बच्चे को दूसरों के नाम से पुकार लेती हूँ.” सुधा का जवाब था.

“अब सोचो सुधा,” नन्दा ने कहा, “इन बच्चों के नाम ऐसे तो नहीं है न जो तुमने कभी नहीं सुने होंगे? शायद सभी परिचित और सहज से शब्द होंगे, हैं ना?”

“हाँ नन्दा, तुम्हारी बात सही है.” सुधा ने सहमति दी.

“सुधा, अब इससे थोड़ी मुश्किल परिस्थिति की कल्पना करते हैं. मान लो आज तुम्हें एक नयी कक्षा दी जाती है. बच्चे सौ हैं और जापान के हैं. अब तुम्हारे पास नामों के सौ ऐसे शब्द होंगे जो तुमने कभी सुने नहीं होंगे. इसके अलावा सौ ऐसे चेहरे भी होंगे जिनमें फर्क करना थोड़ा मुश्किल होगा.”

“अब सोचो जरा, क्या हर एक चेहरे को नाम के साथ याद रखना आसान रहेगा?”

सुधा और हरप्रीत दोनों के चेहरे पर असमर्थता के भाव स्पष्ट रूप से दिखाई पद रहे थे. दोनों में से कोई कुछ नहीं कहा सका.

नन्दा ने फिर कहा, “अभी मैं चाहूँ तो इस काम में कुछ और भी जोड़ सकती हूँ, जैसे जिस क्रम में ये नाम रजिस्टर में लिखे हैं उसी क्रम में नाम बताओ, और अगर नहीं बता पाओ तो डांट खाने के लिए तैयार रहो.”

इस बात की गंभीरता और इससे जुड़ी बच्चों की मुश्किलों को सुधा और हरप्रीत दोनों ही महसूस कर रहीं थीं. दोनों ही जैसे उस परिस्थिति में खो गईं थीं. नन्दा चुप हो गई थी. उसने अपने

दोनों साथियों के मन में बन रही तस्वीर को बनने दिया. कुछ पल ऐसे ही बीते. फिर इस गहरी और अर्थ भरी चुप्पी को तोड़ते हुए नन्दा ने आगे अपनी बात रखी. उसने कहा -

"सुधा, गिनती सीखना, नाम याद करने से थोड़ा ज्यादा मुश्किल है. गिनती में संख्या के नाम और उसके अंकों के रूप में प्रदर्शन जिसे हम संख्यांक कहते हैं, से अलग और बात होती है जो इन दोनों से ज्यादा जरूरी है."

"क्या इससे भी अलग कोई और बात भी अभी बाकी है?" हरप्रीत के आँखों में आश्चर्य था.

"हाँ प्रीत, जब तुम पाँच बोलती हो तो ये केवल संख्या का नाम भर होता है, जैसा हमारे आस पास की दूसरी चीजों के नाम होते हैं, बिल्कुल वैसे ही. और जब तुम पाँच के लिए उसका विशेष संकेत बोर्ड पर या कागज़ पर उकेरती हो तो उसे हम संख्यांक कहते हैं. ये दोनों ही चीज़ें संख्या नहीं हैं, संख्या को व्यक्त करने के साधन मात्र हैं."

"अरे बाप रे! तो फिर ये संख्या क्या चीज़ है नन्दा?" हरप्रीत और सुधा दोनों आश्चर्य में पड़ गईं.

संख्या को समझने के लिए थोड़ी और प्रतीक्षा करो प्रीत, वह भी समझ में आएगा. संख्या नाम और संख्यांक, चीजों के एक विशेष समूह के साइज़ या विस्तार या आकार का बोध कराती हैं. जैसे मान लो हम 'पचहत्तर' कहें या सात और पाँच के संकेतों को कागज पर एक खास क्रम में लिखें तो ये एक निश्चित और विशेष अर्थ को व्यक्त करते हैं. अब यदि सात और पाँच के संकेतों के लिखने का क्रम बदल दें तो यही आकृतियां किसी दूसरे समूह या दूसरे आकार को प्रदर्शित करने लगती हैं. एक समय यह भी आता है कि वस्तुएँ या उनका समूह नहीं होता केवल

एक बोध या मानसिक अनुभूति रह जाती है. दिमाग में बनी ये चीज़ ही संख्या है जो वस्तु नहीं हैं.

पाँच कलम, पाँच किताबें, पाँच फूल – इन सब में वस्तुओं से परे जो गुण है जो तीनों समूहों में उपस्थित है वो है इसके पाँच होने का गुण.....यानि पांचपन.....यही संख्या है.

“उफ़्फ़ ! ये तो बहुत मुश्किल है.” सुधा ने अपने सिर पर हाथ रख लिया.

“नहीं सुधा, बिल्कुल भी मुश्किल नहीं है.” नन्दा ने सुधा को आश्वस्त करते हुए कहा. हम एक संख्या पच्चहत्तर की बात कर रहे हैं. एक शिक्षक के रूप में हमारी पहली कोशिश तो ये हो कि हम पहले खुद इसे इसके वास्तविक रूप में देख पाएँ और फिर बच्चों को भी वैसा ही महसूस करा पाएँ.”

नंदा इतना कह कर थोड़ा चुप हो गई. वो देख रही थी कि ये बात उन दोनों को स्पष्ट नहीं हो पा रही थी. वह समझ रही थी कि संख्या कि ये अमूर्तता संख्या नाम या संख्यांक को ही संख्या मानने की ओर हम सब को धकेल देती है.

उसने फिर कहा, “सुधा मैं इस बात को कुछ अलग ढंग से रखती हूँ. मान लो मैंने तुम्हें एक टुकड़ा गुड़ खाने को दिया और कहा कि इसका स्वाद प्रीत को बताओ. तुम क्या कहोगी?”

सुधा ने कहा, “मैं कहूँगी, गुड़ तो मीठा था.”

“बहुत ठीक. अब प्रीत मैंने तुम्हें एक चम्मच भर शहद दिया और तुम्हें भी कहा कि खा कर इसका स्वाद सुधा को बताओ. तुम क्या कहोगी?”

“बेशक मैं भी कहूँगी मीठा है.”

“अरे भाई, कुछ हमें भी तो खिलाया जाये.” अचानक एहसान मियां ने कमरे में प्रवेश किया. उनकी उपस्थिती सभी को खुशी और उत्साह से भर देती है. अपने प्रधान पाठक के आने पर तीनों खड़ी हो गईं. सुधा ने हँसते हुए कहा, “सर, आइए न, बैठिए. कल हमारी बातचीत अधूरी रह गयी थी. बस उसी को आगे बढ़ाया है हमने.”

“नन्दा, मुझे तुमसे शिकायत है, मैंने तुमसे पहले भी कई मर्तबा कहा है कि अपनी बातचीत में मुझे भी शरीक कर लिया करो पर तुम हमेशा भूल जाती हो. भाई, ये बात सही है कि मेरी उम्र हो चली है लेकिन तुम सब जानती हो कि कुछ नया सीखने में मुझे अब भी उतनी ही दिलचस्पी है जितनी एक बच्चे को होती है. और ऐसी चर्चाएँ तो कुछ न कुछ सिखाती ही हैं,” एहसान मियां ने कहा.

“सर मुझे माफ़ करें, आइंदा मैं ध्यान रखूंगी. आज तो बस यूं ही बात चल पड़ी थी.”

“अच्छा अगर ऐसा है तो तुम मुझे क्या खिलाओगी.” एहसान मियां ने हँसते हुए कहा.

नन्दा ने कहा, “सर मान लीजिये मैंने आपको बताशे खिलाये और कहा कि आप बताशे का स्वाद सुधा और प्रीत को बताएं तो आप क्या कहेंगे?”

“अरे भाई, और क्या कहेंगे, बेशक यही कहेंगे कि बताशे बहुत मीठे हैं.”

“बहुत अच्छा, आप तीनों ने गुड़, शहद और बताशों के लिए कहा ‘मीठे हैं’. अब सोचिए तीनों कि मिठास क्या एक जैसी होगी?”

नन्दा के इस सवाल पर तीनों सोच में पड़ गए. तीनों समझ रहे थे कि गुड़, बताशे और शहद तीनों मीठे तो हैं लेकिन तीनों की मिठास में कुछ न कुछ फर्क भी है. लेकिन कोई जवाब नहीं आया.

“अब आप तीनों से यदि मैं कहूँ अपनी अपनी चीजों की मिठास एक दूसरे को बताइए तो सोचिए आप ये कैसे बताएँगे.” नन्दा ने जोड़ा.

बात सहज नहीं थी.

इस सवाल का जवाब क्या है?

गिनती सीखने से इस बात का क्या संबंध है?

क्या नन्दा अपनी बात अपने साथियों को समझा पायीं?

इस पर अगले अंक में आपसे बातचीत होगी।

संख्या-चार्ट और संबंधित गतिविधियां

लेखक – संजय गुलाटी

संख्या-चार्ट गणित पढ़ाने का एक बहुमुखी उपकरण है. इसका उपयोग संख्या पैटर्न, संख्याओं के आपसी संबंध, संक्रियाएँ और समस्या समाधान से संबंधित गतिविधियां आदि पर कक्षा 1 से कक्षा 5 के बच्चों के साथ कार्य किया जा सकता है. संख्या-चार्ट की गतिविधियां बच्चों में संख्या-बोध के विकास में मदद करती हैं और इन गतिविधियों को कक्षा में व्यक्तिगत रूप से, छोटे–छोटे समूहों में या पूरी कक्षा के साथ कराया जा सकता है. साथ ही शिक्षक बच्चों को इनके अतिरिक्त अन्य गतिविधियाँ सोचने के लिए भी प्रेरित कर सकते हैं.

0	1	2	3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
30	31	32	33	34	35	36	37	38	39
40	41	42	43	44	45	46	47	48	49
50	51	52	53	54	55	56	57	58	59
60	61	62	63	64	65	66	67	68	69
70	71	72	73	74	75	76	77	78	79
80	81	82	83	84	85	86	87	88	89
90	91	92	93	94	95	96	97	98	99

चित्र में 0 – 99 तक की संख्याओं का एक संख्या-चार्ट दिखाया गया है। इस चार्ट की मदद से नीचे दी गयी गतिविधियां करायी जा सकती हैं.

1. **विशेष संख्याएं**: यह गतिविधि बच्चों को संख्या-चार्ट से परिचित कराने में मदद करती है. बच्चे संख्या-चार्ट पर कंकड़ की मदद से पाँच से दस संख्याओं को चिन्हांकित करते हैं और अपने साथी को कि ये संख्याएं उनके लिए विशेष क्यों हैं.
   - मेरी उम्र
   - मेरी जन्म तारीख
   - मेरे परिवार में सदस्यों की संख्या
   - मेरी प्रिय संख्या
   - मेरी कक्षा में बच्चों की संख्या
   - मेरे विद्यालय में शिक्षकों की संख्या
   - मेरे गाँव में घरों की संख्या
   - मेरे गाँव की शहर से दूरी
2. **चित्र बनाएं** : यह गतिविधि संख्या-चार्ट के ज्ञान को पुष्ट कर बच्चों को पैटर्न को चित्र रूप में देखने में मदद करती है. जैसे, आप एक-एक कर नीचे दी गयी संख्याएं बोलते हैं और बच्चे उन संख्याओं पर कंकड़ रखते जाते हैं:

   1 , 71 , 17 , 53 , 44 , 35 , 34 , 8 , 78 , 12 , 67 , 23 , 45 , 62 , 26 , 56

   संख्या बोलना खत्म करने से पहले बच्चों से पूछें कि उन्हें कौन सा चित्र नजर आ रहा है. यदि बच्चे चित्र पहचान लें तो उन्हें आगे की संख्याएं बताने को कहें जिससे चित्र पूरा किया जा सके.
3. **पड़ोसी संख्या ढूंढना** : यह गतिविधि बच्चे के संख्या-चार्ट के ज्ञान को पुष्ट करने में सहायक होती है. बच्चे एक खाली संख्या-चार्ट का उपयोग करेंगे. एक बच्चा 0 – 99 के बीच कोई एक संख्या चुननेगा. अन्य बच्चे खाली-चार्ट में उस संख्या को सही जगह पर लिखेंगे। इसके पश्चात वे उस संख्या की सभी पड़ोसी संख्याएं लिखेंगे. संख्या-चार्ट पर पड़ोसी-संख्या वह संख्या है जो चुनी गयी संख्या से एक कम, एक अधिक, दस कम और

दस अधिक होती है. अलग-अलग बच्चों को संख्या चुनने का मौका देते हुए संख्या-चार्ट के पूरा भरने तक इस गतिविधि को कराया जाए.

4. **नाम का पैटर्न:** यह गतिविधि बच्चों को विभिन्न प्रकार के संख्या-पैटर्न और संख्या-संबंधों से परिचय कराने के साथ-साथ गुणा की संक्रिया का एक आधार भी तैयार करती है. इसके लिए बच्चे एक खाली संख्या-चार्ट का उपयोग करते हैं. बच्चे चार्ट में अपना नाम लिखेंगे, हर बॉक्स में एक अक्षर, जब तक की चार्ट पूरी तरह से न भर जाए. अब बच्चे अपने नाम के पहले अक्षर (चार्ट में जहाँ-जहाँ भी आये हैं) को शेड करेंगे, इस प्रकार उन्हें एक पैटर्न मिलेगा. बच्चे कक्षा में दूसरे बच्चों को ढूँढेंगे जिनका पैटर्न उसके पैटर्न के समान हो. समान पैटर्न के बच्चे एक साथ बैठकर अपने पैटर्न के बारे में चर्चा करेंगे. इस प्रकार के प्राप्त पैटर्न 2 , 3 , 4 , 5 , 6 , 7 आदि के गुणज होंगे जो बच्चों के नाम में अक्षरों की संख्या पर निर्भर करेगा.
5. **संख्या पैटर्न**: यह गतिविधि बच्चों को विभिन्न प्रकार के संख्या-पैटर्न और संख्या-संबंधों से परिचय कराने के साथ-साथ गुणा की संक्रिया का एक आधार भी तैयार करती है.

0	1	2	3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
30	31	32	33	34	35	36	37	38	39
40	41	42	43	44	45	46	47	48	49
50	51	52	53	54	55	56	57	58	59
60	61	62	63	64	65	66	67	68	69
70	71	72	73	74	75	76	77	78	79
80	81	82	83	84	85	86	87	88	89
90	91	92	93	94	95	96	97	98	99

- बच्चों से कहें कि वे उन सभी संख्याओं पर कंकड़ रखें जिनके इकाई या दहाई के स्थान पर 3 आता है. बच्चों को संख्या पैटर्न या संख्याओं के संबंधों पर विचार करने के लिए प्रेरित करें. उदाहरण के लिए ये संख्याएं एक क्षैतिज(आड़ी) और एक उर्ध्वाधर (खड़ी) रेखाएं बनाती हैं. ये रेखाएं 33 पर मिलती हैं और इस संख्या में इकाई और दहाई दोनों ही स्थान पर 3 है. उर्ध्वाधर रेखा पर संख्याएं उपर से नीचे 10 से बढ़ती हैं और क्षैतिज रेखा पर संख्याएं बाँए से दाँए 1 से बढ़ती है. बच्चों से पूछें कि क्या अन्य संख्याओं के लिए भी ये संबंध हैं. उन्हें उन सभी संख्याओं पर कंकड़ रखने को कहें जिनके इकाई या दहाई के स्थान पर 3 आता है और इस प्रकार बने पैटर्न और संख्या संबंधों पर चर्चा करने को कहें.
- बच्चों को 11, 22, 33, 44, 55, 66, 77, 88, 99 संख्याओं पर कंकड़ रखने को कहें और संख्याओं के पैटर्न और संबंधों पर चर्चा करें. एक पैटर्न जो बच्चे देख सकते हैं कि संख्याओं में अंको का योग (11 में 1+1=2 , 22 में 2+2=4 आदि) 2, 4, 6, 8, 10, 12, 14, 16, 18 है और ये सभी सम संख्याएं हैं.
- बच्चों को 1, 12, 23, 34, 45, 56, 67, 78, 89 संख्याओं पर कंकड़ रखने को कहें और संख्याओं के पैटर्न और संबंधों पर चर्चा करें. एक पैटर्न जो बच्चे देख सकते हैं कि संख्याओं में अंको का योग 1, 3, 5, 7, 9, 11, 13, 15, 17 है और ये सभी विषम संख्याएं है. बच्चों को अगले विकर्ण की संख्याओं के साथ काम कर संख्या पैटर्न और संबंधों को देखने के लिए प्रेरित करें.
- बच्चों को 5, 14, 23, 32, 41, 50 संख्याओं पर कंकड़ रखने को कहें और उन्हें पैटर्न और संख्या संबंधों का अवलोकन करने को कहें. बच्चे यह देख सकते हैं कि सभी संख्याओं के अंको का योग 5 है और 5 विकर्ण की पहली संख्या है. इसी प्रकार बच्चों को अन्य विकर्णों के पैटर्न का अवलोकन करने का समय दें.

6. **आगे गिनना**: यह गतिविधि बच्चों के जोड़ की संक्रिया की समझ का आधार बनाती है. बच्चे आपके निर्देश के अनुसार संख्याओं पर कंकड़ रखेंगे.

25 और उसके आगे 3 गिने	32 और उसके आगे 5 गिने
35 और उसके आगे 6 गिने	36 और उसके आगे 7 गिने
73 और उसके आगे 2 गिने	41 और उसके आगे 4 गिने

7. **'से' ज्यादा:** यह गतिविधि बच्चों में 'से ज्यादा या इससे अधिक' की अवधारणा की पुष्टि और जोड़ की अवधारणा सीखने में मदद करती है. बच्चे आपके निर्देश के अनुसार संख्याओं पर कंकड़ रखेंगे।

15 से 4 अधिक	40 से 9 अधिक
52 से 3 अधिक	26 से 5 अधिक
61 से 6 अधिक	43 से 7 अधिक

यहाँ शिक्षक "अधिक" शब्द के स्थान पर "ज्यादा" शब्द का उपयोग भी कर सकते हैं.

8. **उल्टा गिनना**: यह गतिविधि घटाव संक्रिया की समझ का आधार रखती है. बच्चे आपके निर्देश के अनुसार संख्याओं पर कंकड़ रखेंगे.

38 से पीछे 4 गिने	58 के पीछे 2 गिने
23 के पीछे 6 गिने	73 के पीछे 3 गिने
47 के पीछे 1 गिने	69 के पीछे 8 गिने

यहाँ शिक्षक "पीछे" शब्द के स्थान पर "पहले" शब्द का उपयोग भी कर सकते हैं।

9. **"से" कम**: यह गतिविधि बच्चों में "से कम या इससे कम" की अवधारणा की पुष्टि और घटाने की अवधारणा सीखने में मदद करती है. बच्चे आपके निर्देश के अनुसार संख्याओं पर कंकड़ रखेंगे.

49 से 3 कम	89 से 8 कम
21 से 4 कम	30 से 7 कम

56 से 6 कम 16 से 3 कम

10.दस अधिक या कम: यह गतिविधि बच्चों में 10 की गिनती की पुष्टि करता है. यह बच्चों में स्थानीय मान की समझ के लिए आधार का काम करता है.

2 से 10 ज्यादा (अधिक)	48 से 10 कम
24 से 10 ज्यादा	62 से 10 कम
63 से 10 ज्यादा	76 से 10 कम

11. बिंगो: यह गतिविधि बच्चों को इकाई और दहाई के साथ स्थानीय मान समझने में मदद करती है. इस गतिविधि के लिए हर बच्चा खाली संख्या-चार्ट का उपयोग करेगा. शिक्षक 0 – 99 के काउंटर्स एक छोटे बक्से में रखेंगे. एक बच्चा बक्से से एक काउंटर निकालेगा और संख्या को इकाई व दहाई के रूप में कहेगा, उदाहरण के लिए 25 को वह दो दहाई और पाँच इकाई कहेगा. कक्षा के अन्य बच्चे संख्या सुनकर संख्या-चार्ट में उस स्थान पर एक कंकड़ रखेंगे. अलग-अलग बच्चे बक्से से काउंटर निकालकर संख्या कहेंगे और बच्चे अपने संख्या-चार्ट पर कंकड़ रखते जाएंगे. यह कार्य तब तक चलता रहेगा जब तक कि बच्चों की कोई पंक्ति या कॉलम पूरा नहीं हो जाता.

12.संख्या चार्ट पर जोड़ना और घटाना: यह गतिविधि बच्चों को संख्या चार्ट पर जोड़ने और घटाने के अभ्यास का मौका देती है. संख्या चार्ट पर संख्याओं को किस प्रकार से जोड़ा जाता है, बच्चों के सामने इसका प्रदर्शन करें. उदाहरण के लिए 33 + 48. बच्चे 33 पर एक कंकड़ रखेंगे. उनसे पूछें कि 48 में कितने दहाई (4) हैं. उन्हें याद दिलाएं कि एक बॉक्स नीचे आने पर संख्या 10 बढ़ती है. हमें 33 से 4 बॉक्स नीचे आना है (43, 53, 63, 73). बच्चों से पूछें कि 48 में 8 क्या दिखाता है (इकाई). बच्चों को याद दिलाएं कि क्षैतिज दिशा में बाँयीं ओर जाने से संख्या एक से बढ़ती है. हमें 73 से बाँयीं ओर 8 स्थान आगे बढ़ना है (74, 75, 76, 77, 78, 79, 80, 81). इस प्रकार हम 81 पर पहुँचे, अत: 33 + 48 = 81। इसी प्रकार और उदाहरणों से जोड़ का अभ्यास कराएं.

0	1	2	3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
30	31	32	33	34	35	36	37	38	39
40	41	42	43	44	45	46	47	48	49
50	51	52	53	54	55	56	57	58	59
60	61	62	63	64	65	66	67	68	69
70	71	72	73	74	75	76	77	78	79
80	81	82	83	84	85	86	87	88	89
90	91	92	93	94	95	96	97	98	99
Addition using 100 Chart (16+23) , (23+35) , (51+46)									

अब संख्या चार्ट की मदद से घटाने का प्रदर्शन करें. उदाहरण के लिए 72 – 44. बच्चे 72 पर एक कंकड़ रखेंगे. बच्चों से पूछें, 44 में कितने दहाई हैं (4). 72 से चार बॉक्स उपर चढ़ेंगे (62, 52, 42, 32). अब बच्चों से पूछें कि 44 में दांयी ओर का 4 क्या दर्शाता है (इकाई). अब हम 32 से क्षैतिज दिशा में बाँयीं ओर 4 स्थान पीछे जाएंगे (31, 30, 29, 28). इस प्रकार हम 28 पर पहुँचे, अत: 72 – 44 = 28. इसी प्रकार और उदाहरणों से घटाने का अभ्यास कराएं.

13. **छोड़कर गिनना या गुणज पहचानना:** यह गतिविधि बच्चों में छोड़ कर गिनना, गुणज और गुण की अवधारणा की समझ विकसित करने में मदद करती है.

    - बच्चे दो–दो छोड़ कर गिनते हुए (0, 2, 4, 6, 8, 10,.....98) संख्याओं पर कंकड़ रखेंगे. बच्चों को इस प्रकार बने पैटर्न को पहचानने को कहें. इस प्रकार कंकड़ पाँच उर्ध्वाधर (खड़ी) रेखाएं बनाएंगे. सभी संख्याएं सम संख्याएं और 2 की गुणज होंगी. इस संख्याओं में इकाई अंक 0 या 2 या 4 या 6 या 8 होंगे.

- बच्चों को तीन–तीन छोड़ कर संख्याओं पर कंकड़ रखने को कहें. इस प्रकार का बना पैटर्न विकर्ण रेखाओं को दिखाता है और इन विकर्णों की संख्याओं पर अंकों का योग 3, 6, 9, 12, 15, 18 होगा.
- इसी प्रकार बच्चों को 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10 तक संख्याओं को छोड़ कर कंकड़ रखने और बने पैटर्न का अध्ययन करने को कहें.

14. **सम-अपवर्त्य पहचानना**: यह गतिविधि बच्चों में 'छोड़ कर गिनने' और गुणज की अवधारणा की पुष्टि करती है. यह गतिविधि तीन या चार बच्चों के समूह में करायी जा सकती है. समूह में बच्चे संख्या-चार्ट पर 3 के गुणज पर कंकड़ रखेंगे. फिर बच्चे 4 के गुणज पर कंकड़ रखेंगे. अब बच्चे उन संख्याओं को लिखेंगे जिन पर दो कंकड़ (12, 24, 36, 48, 60, 72, 84, 96) रखे हैं. इन संख्याओं को सम-अपवर्त्य (common multiple) कहते हैं. इन सम-अपवर्त्य में सबसे छोटे अपवर्त्य की पहचान करें (12) और 100 तक के 3 और 4 के सम-अपवर्त्य में सबसे बड़े अपवर्त्य (96) की पहचान करें. इसी प्रकार बच्चों से अन्य संख्याओं के गुणज, सम-अपवर्त्य, सबसे छोटे और 100 तक सबसे बड़े अपवर्त्य की पहचान का अभ्यास कराएं.

15. **अभाज्य संख्याएं**: यह गतिविधि बच्चों में अभाज्य संख्याओं की समझ विकसित करने में मदद करेगी और वे 0 – 99 के बीच की अभाज्य संख्याओं को जान पाएंगे. आपके दिए निर्देशों के अनुसार बच्चे संख्याओं पर कंकड़ रखते जाएंगे. 4 से शुरू करते हुए 2 के सभी गुणज पर कंकड़ रखने को कहें. इसी प्रकार 6 से शुरू करते हुए 3 के सभी गुणज पर कंकड़ रखने को कहें. फिर बच्चे 4 के सभी गुणज पर कंकड़ रखेंगे. अब बच्चे 5 को छोड़कर 5 के सभी गुणज पर कंकड़ रखेंगे और इसके बाद वे 6 के सभी गुणज पर कंकड़ रखेंगे. अंत में 7 को छोड़कर 7 के सभी गुणज पर कंकड़ रखेंगे. इस बात का ध्यान रखा जाए कि यदि किसी संख्या पर कंकड़ रखा हो तो उस पर दोबारा कंकड़ रखने की आवश्यकता नहीं है.

~~0~~	~~1~~	2	3	~~4~~	5	~~6~~	7	~~8~~	~~9~~
~~10~~	11	~~12~~	13	~~14~~	~~15~~	~~16~~	17	~~18~~	19
~~20~~	~~21~~	~~22~~	23	~~24~~	~~25~~	~~26~~	~~27~~	~~28~~	29
~~30~~	31	~~32~~	~~33~~	~~34~~	~~35~~	~~36~~	37	~~38~~	~~39~~
~~40~~	41	~~42~~	43	~~44~~	~~45~~	46	47	~~48~~	~~49~~
~~50~~	~~51~~	~~52~~	53	~~54~~	~~55~~	~~56~~	~~57~~	~~58~~	59
~~60~~	61	~~62~~	~~63~~	~~64~~	~~65~~	~~66~~	67	~~68~~	~~69~~
~~70~~	71	~~72~~	73	~~74~~	~~75~~	~~76~~	~~77~~	~~78~~	79
~~80~~	~~81~~	~~82~~	83	~~84~~	~~85~~	~~86~~	~~87~~	~~88~~	89
~~90~~	~~91~~	~~92~~	~~93~~	~~94~~	~~95~~	~~96~~	97	~~98~~	~~99~~

अब बिना कंकड़ रखी संख्याओं की पहचान करें (2, 3, 5, 7, 11, 13, 17, 19, 23, 29, 31, 37, 41, 43, 47, 53, 59, 61, 67, 71, 73, 79, 83, 89, 97). ये सभी अभाज्य संख्याएं (Prime Numbers) हैं. बच्चों को बताएं कि अभाज्य संख्याओं के केवल दो ही गुणनखण्ड, 1 और स्वयं वह संख्या, होते हैं. अभाज्य संख्याएं स्वयं और एक से ही अभाज्य संख्याएं केवल स्वयं या एक से ही विभाजित होती हैं.

इस प्रकार एक संख्या-चार्ट की मदद से संख्याओं से संबंधित अलग-अलग अवधारणाओं समझ विकसित की जा सकती है. उपरोक्त गतिविधियों के अतिरिक्त कई अन्य गतिविधियां भी संख्या-चार्ट की मदद से करायी जा सकती हैं. संख्या-चार्ट बहुत ही आसानी से A4 पेपर पर बनाया जा सकता है या कंप्यूटर में किसी स्प्रेडशीट अथवा वर्डप्रोसेसर साफ्टवेयर की मदद से भी इसे तैयार कर उपयोग में लाया जा सकता है.

पहेलियाँ

पस्तुतकर्ता - टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला

1. सुंदर आकर्षक वस्तु एक
   जिसमें भाई-बहन का प्यार
   है एक प्रसिध्द अभिनेत्री है वह
   जिनका पति है गुलजार
2. एक पदार्थ है वह
   सुर्ख वर्ण तरल है
   रग-रग में रहता
   बता.... बहुत सरल है
3. एक शब्द अंग्रेजी का
   दस अक्षर होते जिसमें
   पाँच व्यंजन हैं शामिल
   पाँच स्वर भी होते जिसमें
4. चुटकी भर डाल बिटिया मुझे
   बढ़िया सोच-विचार
   कितनी भी स्वादिष्ट सब्जी
   मुझ बिन होती बेकार
5. चार अक्षरों का नाम मेरा
   मैं सूचना का एक आधार
   तुम्हारे बड़े काम का हूँ मैं
   रखो जतन से मुझे यार

उत्तर:- 1 - राखी, 2 – खून, 3 – Precaution, 4 – नमक, 5 - मोबाईल

चित्र और चित्र कविता

प्रस्तुतकर्ता - ईश्वरचंद्र साहू, फरसाबहार, जशपुर

चित्र कविता - सरमीला

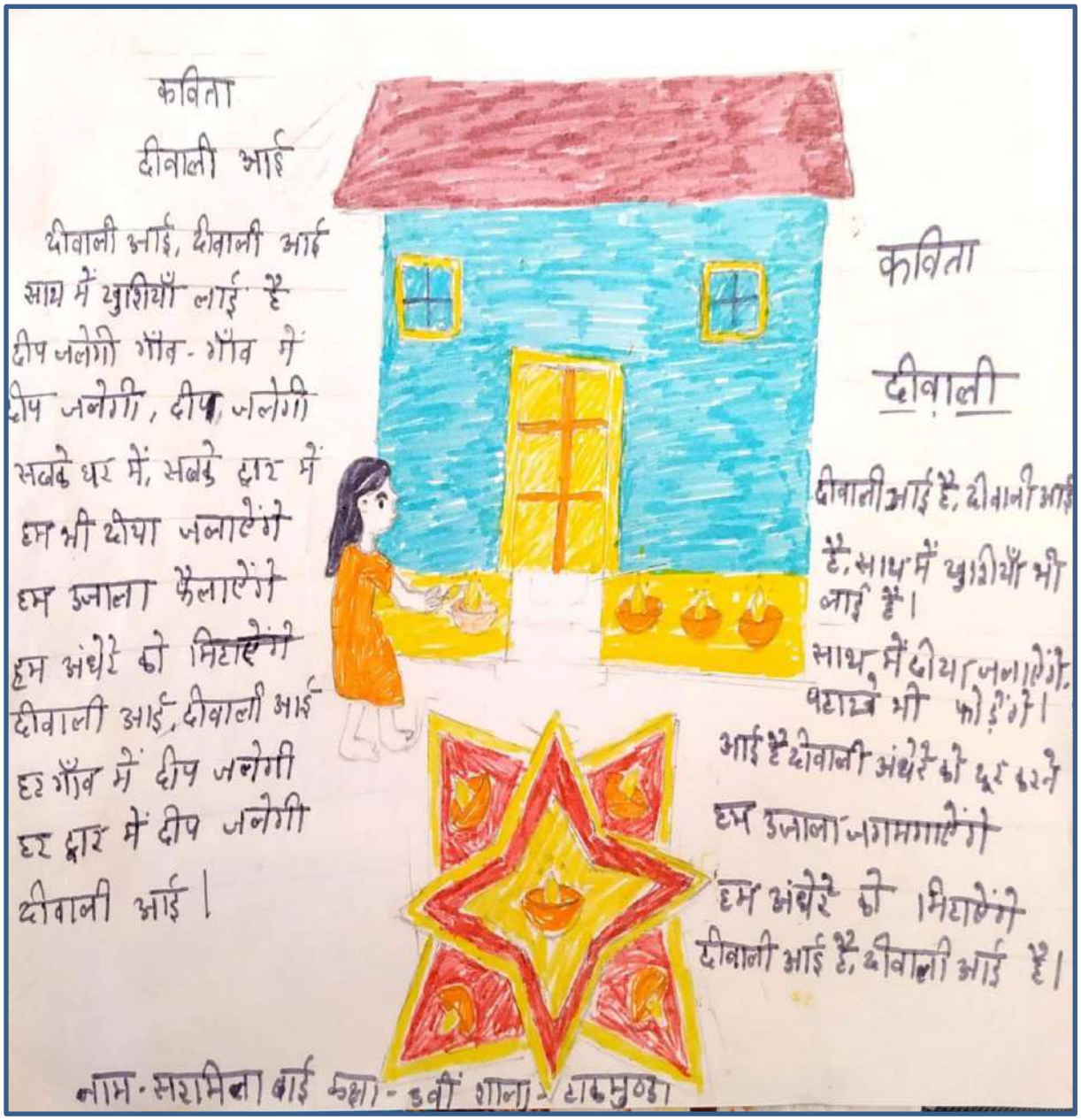

चित्र - राजेश्वरी

भाखा जनउला

प्रस्तुतकर्ता - दीपक कंवर

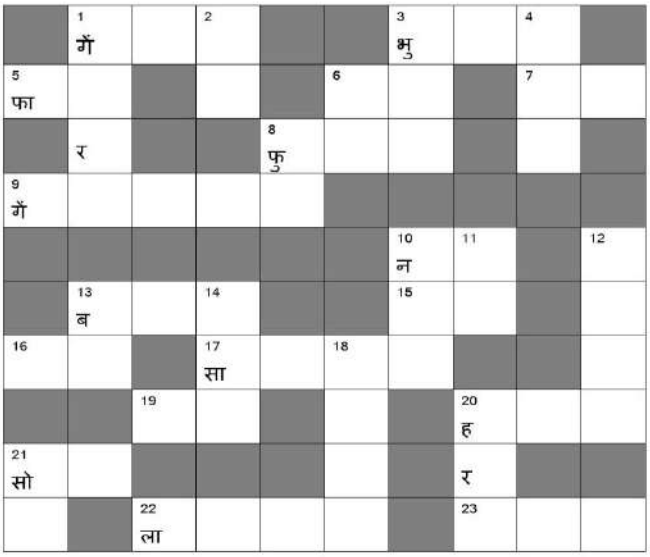

बाएँ से दाएँ - 1. पशुओं को बांधने का रस्सी, 3. बड़ा छेद, 5. होली, 6. पति की माँ, 7. पगली, 8. लड़कियों का प्रसिध्द खेल, 9. एक सब्जी का नाम, 10. नहीं, 13. बबूल, 15. भारी, 16. जड़, 17. सावधान, 19. क्या, 20. एक पकवान का नाम, 21. दया, 22. राज्य की प्रसिध्द भाजी. 23. हिला

ऊपर से नीचे - 1. गेंचुआ, 2. इसी वर्ष, 3. मच्छर, 4. किसलिए, 6. सब्जी, 8. नाक का आभूषण, 10. बहुत, 11. हल्का, 12. तलुआ, 13. बड़ी, 14. रूठा, 18. एक भाजी का नाम, 20. हारा हुआ, 21. सीध मे

उत्तर